वर्ष-1 , अंक-17 | बेंगलुरु, रविवार , 06 सितम्बर 2026 | RNI NO:KNHIN/26/A5540 | Contact:news@bhaarataarth.com | पृष्ठ - 4 ,मूल्य - 5 रुपए

दैनिक समाचार पत्र

# भारतार्थ खबर

ख़बर नहीं, उसका अर्थ

देश | समाज | राजनीति | अर्थव्यवस्था | शिक्षा | संस्कृति | दुनिया

# आज भारत-पाकिस्तान महिला क्रिकेट महामुकाबला

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

दुबई, 5 सितंबर 2026। महिला एशिया कप 2026 के बहुप्रतीक्षित मुकाबले में आज भारत और पाकिस्तान की महिला क्रिकेट टीमें आमने-सामने होंगी। दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में होने वाला यह ग्रुप-ए मुकाबला भारतीय समयानुसार रात 8 बजे शुरू होगा। भारत पहले ही सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की कर चुका है, जबकि पाकिस्तान के लिए यह मुकाबला टूर्नामेंट के अगले चरण की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण है। भारत ने टूर्नामेंट में अब तक प्रभावशाली प्रदर्शन किया है। टीम ने थाईलैंड और हांगकांग के खिलाफ जीत दर्ज कर अपनी स्थिति मजबूत की है। हांगकांग के खिलाफ भारत ने 193 रन बनाए थे और मुकाबला 137 रन से जीता था। इस प्रदर्शन से भारतीय टीम के बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनों विभागों की मजबूती सामने आई है। जीत के साथ अभियान खत्म करने की कोशिश भारतीय टीम की नजर ग्रुप चरण का अभियान जीत के साथ समाप्त करने पर होगी। सेमीफाइनल में स्थान पहले ही सुनिश्चित होने के कारण टीम प्रबंधन को खिलाड़ियों के संयोजन और रणनीति को परखने का अवसर भी मिल सकता है। हालांकि भारत-पाकिस्तान मुकाबले की प्रतिस्पर्धात्मक प्रकृति को देखते हुए भारतीय टीम किसी भी स्तर पर ढिलाई बरतना नहीं चाहेगी। दूसरी ओर पाकिस्तान के लिए यह मुकाबला महज प्रतिष्ठा की लड़ाई

नहीं है। टीम को टूर्नामेंट के अगले चरण में पहुंचने की अपनी संभावनाओं को मजबूत करने के लिए बेहतर प्रदर्शन की जरूरत है। ऐसे में पाकिस्तान की टीम भारत के खिलाफ पूरी तैयारी और दबाव के बीच मैदान में उतरेगी। भारत का पलड़ा मजबूत भारत और पाकिस्तान के बीच महिला टी-20 क्रिकेट में अब तक भारत का रिकॉर्ड बेहतर रहा है। दोनों टीमों के बीच हुए 17 टी-20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में भारत ने 14 में जीत दर्ज की है। हालांकि क्रिकेट में पुराने आंकड़े मैदान पर जीत की गारंटी नहीं होते और एक दिन का प्रदर्शन पूरे समीकरण को बदल सकता है। भारतीय बल्लेबाजी में स्मृति मंधाना और शेफाली वर्मा जैसी खिलाड़ियों पर नजर रहेगी। हांगकांग के खिलाफ मंधाना ने शानदार शतकीय पारी खेलकर अपनी फॉर्म का परिचय दिया था। वहीं भारतीय गेंदबाजी आक्रमण भी अब तक विपक्षी बल्लेबाजों के लिए चुनौती साबित हुआ है। मुकाबले पर प्रशंसकों की नजर भारत-पाकिस्तान मुकाबला हमेशा से क्रिकेट प्रशंसकों के बीच विशेष आकर्षण का केंद्र रहा है। महिला क्रिकेट में भी दोनों टीमों की भिड़ंत को लेकर दर्शकों में खास उत्साह है। दुबई में होने वाले इस मुकाबले पर भारत और पाकिस्तान ही नहीं, बल्कि पूरे क्रिकेट जगत की नजर रहेगी। हालांकि खेल पत्रकारिता की दृष्टि से इस मुकाबले को केवल प्रतिद्वंद्विता के चश्मे से देखना उचित नहीं होगा। यह एशिया कप की एक महत्वपूर्ण क्रिकेट प्रतियोगिता का मुकाबला है, जहां दोनों टीमों के खिलाड़ियों के लिए अपनी क्षमता साबित करने का अवसर भी है। रणनीति और दबाव की परीक्षा दुबई की परिस्थितियों में टॉस और शुरूआती ओवरों का प्रदर्शन भी मुकाबले की दिशा तय कर सकता है। बल्लेबाजों को अच्छी शुरूआत दिलाने के साथ गेंदबाजों के लिए सही लाइन-लेंथ बनाए रखना महत्वपूर्ण होगा। मध्यक्रम की स्थिरता और दबाव के क्षणों में निर्णय लेने की क्षमता दोनों टीमों के लिए निर्णायक साबित हो सकती है।

भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती अपनी निरंतरता बनाए रखना होगी, जबकि पाकिस्तान को भारतीय गेंदबाजी आक्रमण के सामने मजबूत बल्लेबाजी प्रदर्शन करना होगा। रात 8 बजे शुरू होगा मुकाबला

भारत और पाकिस्तान के बीच महिला एशिया कप 2026 का यह मुकाबला 5 सितंबर 2026 को रात 8 बजे भारतीय समयानुसार दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा। मुकाबला टी-20 प्रारूप में होगा। क्रिकेट प्रशंसकों के लिए यह मुकाबला टूर्नामेंट के सबसे चर्चित मुकाबलों में से एक है। भारत की नजर जहां जीत के साथ ग्रुप चरण समाप्त करने पर होगी, वहीं पाकिस्तान मजबूत प्रदर्शन के जरिए प्रतियोगिता में अपनी स्थिति मजबूत करने की कोशिश करेगा।

# स्मृति मंधाना ने रचा इतिहास

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

दुबई, 5 सितंबर 2026। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की स्टार बल्लेबाज स्मृति मंधाना ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में एक नया इतिहास रचते हुए अपने नाम बड़ी उपलब्धि दर्ज कराई है। महिला एशिया कप 2026 में हांगकांग चीन के खिलाफ मुकाबले के दौरान मंधाना ने पूर्व भारतीय कप्तान मिताली राज के सर्वाधिक अंतरराष्ट्रीय रन के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया।

स्मृति मंधाना ने सभी प्रारूपों में शानदार प्रदर्शन करते हुए 10,868 अंतरराष्ट्रीय रनों के आंकड़े को पार कर महिला अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सर्वाधिक रन बनाने वाली बल्लेबाज के रूप में नया कीर्तिमान स्थापित किया। भारतीय महिला क्रिकेट के लिए यह उपलब्धि विशेष महत्व रखती है। मंधाना ने अपने अंतरराष्ट्रीय करियर के दौरान निरंतर शानदार बल्लेबाजी करते हुए अनेक यादगार पारियां खेली हैं और विश्व क्रिकेट में भारतीय महिला टीम की मजबूत पहचान बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पूर्व कप्तान मिताली राज के लंबे समय से कायम रिकॉर्ड को पीछे छोड़ना स्मृति मंधाना के करियर का एक महत्वपूर्ण पड़ाव माना जा रहा है। यह उपलब्धि केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि भारतीय महिला क्रिकेट के निरंतर विकास और बढ़ती ताकत का भी प्रतीक है।

स्मृति मंधाना की इस ऐतिहासिक उपलब्धि के बाद क्रिकेट जगत और प्रशंसकों में उत्साह का माहौल है। सोशल मीडिया और विभिन्न माध्यमों से उन्हें लगातार बधाइयां मिल रही हैं। महिला क्रिकेट में लगातार नए मानदंड स्थापित कर रहीं स्मृति मंधाना की यह सफलता आने वाली पीढ़ी की युवा महिला क्रिकेटरों के लिए प्रेरणास्रोत बनेगी और उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बड़े सपने देखने का उत्साह प्रदान करेगी।

# हनुमान अंश की वैश्विक उड़ान

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 5 सितंबर 2026। भारतीय सिनेमा में इन दिनों फिल्म हनुमान अंशह्न अपनी अलग पहचान बनाने में सफल रही है। सीमित बजट और बिना बड़े सितारों के बनी इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर उल्लेखनीय प्रदर्शन के बाद अब अंतरराष्ट्रीय दर्शकों तक पहुंचने की तैयारी शुरू कर दी है। फिल्म को 11 सितंबर 2026 से विदेशी सिनेमाघरों में प्रदर्शित किए जाने की योजना है। आध्यात्मिक संत नीम करोली बाबा, जिन्हें उनके अनुयायी महाराज जी के नाम से भी जानते हैं, के जीवन और शिक्षाओं से प्रेरित इस फिल्म का लेखन और निर्देशन विशाल चतुर्वेदी ने किया है। आस्था और आत्मिक परिवर्तन की कहानी हनुमान अंशह्न केवल एक आध्यात्मिक व्यक्तित्व से प्रेरित कथा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें आस्था, प्रेम, सेवा, करुणा और जीवन में आंतरिक परिवर्तन जैसे विषयों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है। फिल्म की कहानी डॉ. राम भोसले नामक पात्र के इर्द-गिर्द आगे बढ़ती है, जिसका जीवन संघर्षों और बदलावों से गुजरता है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में भूमिगत जीवन से जुड़ा यह पात्र आगे चलकर आध्यात्मिक मार्ग की ओर अग्रसर होता है। कथा में नीम करोली बाबा के मार्गदर्शन को उसके जीवन में परिवर्तन का महत्वपूर्ण आधार बताया गया है। धीमी शुरूआत, फिर तेज हुई कमाई 7 अगस्त को रिलीज हुई हनुमान अंशह्न की शुरूआत बॉक्स ऑफिस पर अपेक्षाकृत धीमी रही। शुरूआती दिनों में फिल्म को सीमित दर्शक मिले और सिनेमाघरों में इसके शो भी कम संख्या

में उपलब्ध थे। हालांकि, समय के साथ दर्शकों की सकारात्मक प्रतिक्रिया और मौखिक प्रचार ने फिल्म को नई गति दी। फिल्म की कहानी और आध्यात्मिक विषय से प्रभावित दर्शकों ने इसे व्यापक स्तर पर चर्चा में पहुंचाया। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, चौथे सप्ताह तक फिल्म का भारतीय नेट बॉक्स ऑफिस कलेक्शन लगभग 73 करोड़ रुपये तक पहुंचने का दावा किया गया। करीब 2 करोड़ रुपये के बजट में बनी फिल्म के लिए यह प्रदर्शन उल्लेखनीय माना जा रहा है। बड़ी फिल्मों के बीच बनाई अलग पहचान फिल्म की सफलता में मिली सफलता के बाद अब हनुमान अंशह्न को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित करने की तैयारी की जा रही है। फिल्म 11 सितंबर 2026 से विदेशी सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। अंतरराष्ट्रीय वितरण के माध्यम से फिल्म को विदेशों में रहने वाले भारतीय दर्शकों के साथ-साथ भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक विषयों में रुचि रखने वाले अंतरराष्ट्रीय दर्शकों तक पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा। नीम करोली बाबा का प्रभाव भारत तक सीमित नहीं रहा है और उनके अनुयायी विभिन्न देशों में मौजूद हैं। ऐसे में फिल्म की विदेशी रिलीज को निर्माताओं के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर के रूप में देखा जा रहा है। कहानी की सफलता का संदेश हनुमान अंश की यात्रा भारतीय फिल्म उद्योग के लिए यह संदेश देती है कि सीमित संसाधनों में बनी फिल्म भी दर्शकों से मजबूत जुड़ाव स्थापित कर सकती है। फिल्म ने आध्यात्मिकता, सेवा और मानवीय मूल्यों जैसे विषयों को व्यावसायिक सिनेमा की चर्चा में स्थान दिलाने का प्रयास किया है। अब सबकी निगाहें फिल्म की अंतरराष्ट्रीय रिलीज पर टिकी हैं। भारत में मिली सफलता को यदि फिल्म विदेशी दर्शकों के बीच भी दोहरा पाती है, तो यह भारतीय आध्यात्मिक कथाओं को वैश्विक मंच तक पहुंचाने की दिशा में एक उल्लेखनीय कदम साबित हो सकती है।

# दिल्ली-NCR में बारिश से हाहाकार

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 5 सितंबर 2026। दिल्ली-NCR में शनिवार को हुई बारिश ने एक बार फिर जनजीवन की रफ्तार प्रभावित कर दी। कई इलाकों में जलभराव के कारण सड़क यातायात बाधित हुआ, जबकि लगातार खराब मौसम का असर विमान सेवाओं पर भी पड़ा। निचले इलाकों, अंडरपास और जलभराव वाले मार्गों पर लोगों को आवागमन के दौरान विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है। मौसम विभाग ने दिल्ली के साथ हरियाणा और चंडीगढ़ क्षेत्र में भी भारी बारिश की संभावना जताई है। दिल्ली में 6 सितंबर को भी भारी बारिश का पूर्वानुमान बताया गया है। ऐसे में अगले कुछ घंटों में जलभराव और यातायात संबंधी परेशानियां बढ़ने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। सड़कें बनीं परेशानी का कारण भारी बारिश के बाद दिल्ली-ठउफके कई हिस्सों में सड़कों पर पानी जमा हो गया। जलभराव के कारण वाहनों की गति प्रभावित हुई और कुछ प्रमुख मार्गों पर यातायात दबाव बढ़ गया। निचले इलाकों और अंडरपास में पानी भरने की स्थिति विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण रही। बारिश के दौरान वाहन चालकों से जलभराव वाले रास्तों पर अनावश्यक जोखिम न लेने और प्रशासन की ओर से जारी यातायात संबंधी निर्देशों का पालन करने की अपील की गई है। पैदल यात्रियों को भी खुले मैनहोल, बिजली के उपकरणों और तेज बहाव वाले पानी से दूरी बनाए रखने की आवश्यकता है। हवाई सलाह दी गई है कि वे हवाई अड्डे के लिए रवाना होने से पहले अपनी उड़ान की ताजा स्थिति की पुष्टि कर लें और संभावित यातायात

सेवाओं पर भी असर शुक्रवार की तेज बारिश का असर इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के आसपास भी देखने को मिला। जलभराव और प्रतिकूल मौसम की परिस्थितियों के कारण उड़ान परिचालन प्रभावित हुआ तथा कुछ उड़ानों को अन्य हवाई अड्डों की ओर मोड़े जाने की जानकारी सामने आई। यात्रियों को बाधाओं को देखते हुए यात्रा के लिए अतिरिक्त समय रखें। खराब मौसम की स्थिति में उड़ानों के समय में परिवर्तन या परिचालन संबंधी अन्य बदलाव संभव हैं। प्रशासन के सामने जलनिकासी की चुनौती बारिश के दौरान सबसे बड़ी चुनौती जलनिकासी व्यवस्था को सुचारु बनाए रखना होती है। दिल्ली-ठउफजैसे घनी आबादी वाले महानगरीय क्षेत्र में थोड़े समय की तेज बारिश भी कई स्थानों पर जलभराव की स्थिति पैदा कर सकती है। ऐसे में नगर निकायों और संबंधित एजेंसियों के लिए जलनिकासी, पंपिंग और यातायात प्रबंधन पर तत्काल ध्यान देना आवश्यक हो जाता है। प्रशासनिक एजेंसियां जलभराव वाले क्षेत्रों में पानी निकालने और यातायात व्यवस्था को सामान्य बनाए रखने के प्रयास कर रही हैं। हालांकि लगातार बारिश होने की स्थिति में जलनिकासी व्यवस्था पर अतिरिक्त दबाव पड़ सकता है। अगले दिन भी भारी बारिश का अनुमान मौसम विभाग के पूर्वानुमान को देखते हुए दिल्ली-ठउफके लोगों को अगले कुछ समय तक सतर्क रहने की आवश्यकता है। 6 सितंबर को भी दिल्ली में भारी बारिश की संभावना बताई गई है। बारिश के दौरान लोगों को गैर-जरूरी यात्रा से बचने तथा मौसम और यातायात संबंधी ताजा सूचनाओं पर नजर रखने की सलाह दी जाती है। विशेष रूप से निचले क्षेत्रों में रहने वाले लोगों, दोपहिया वाहन चालकों और नियमित रूप से अंडरपास का उपयोग करने वाले यात्रियों को अतिरिक्त सावधानी बरतनी होगी। बारिश राहत भी, चुनौती भी बारिश जहां गर्मी से राहत और पर्यावरण के लिए आवश्यक जल उपलब्ध कराती है, वहीं महानगरों में कमजोर जलनिकासी व्यवस्था के कारण यही बारिश जनजीवन के लिए चुनौती बन जाती है।

# बुमराह की फिटनेस पर बड़ा टेस्ट

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 5 सितंबर 2026। भारतीय क्रिकेट टीम के स्टार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की फिटनेस आगामी अफगानिस्तान टी20 अंतरराष्ट्रीय सीरीज से पहले चर्चा का प्रमुख विषय बनी हुई है। टीम प्रबंधन उनकी मैच फिटनेस को लेकर पूरी तरह संतुष्ट होने के बाद ही अंतिम फैसला करना चाहता है।

बुमराह के अलावा नितीश कुमार रेड्डी, वॉशिंगटन सुंदर और हर्षित राणा की फिटनेस का भी आकलन किया जा रहा है। चारों खिलाड़ियों को चिकित्सकीय रूप से फिट बताया गया है, लेकिन अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट की चुनौती और मैच के दबाव को देखते हुए उन्हें अभ्यास सत्रों में मैच-सिमुलेशन परीक्षण से गुजरना होगा। जानकारी के अनुसार, खिलाड़ियों की फिटनेस और मैच-तैयारी का यह अहम परीक्षण 4 से 9 सितंबर के बीच किया जाएगा। इस दौरान उनकी शारीरिक क्षमता, कार्यभार सहने की स्थिति और प्रतिस्पर्धी परिस्थितियों में प्रदर्शन का आकलन किया जाएगा।

अफगानिस्तान के खिलाफ भारत की तीन मैचों की टी20 सीरीज 13, 15 और 17 सितंबर को नई दिल्ली में प्रस्तावित है। टीम की कप्तानी श्रेयस अय्यर करेंगे। जसप्रीत बुमराह को टीम में शामिल किया गया है, हालांकि उनकी अंतिम उपलब्धता फिटनेस संबंधी मंजूरी पर निर्भर करेगी। बुमराह की फिटनेस भारतीय टीम के लिए विशेष महत्व रखती है, क्योंकि आने वाले समय में टीम को एशियाई खेलों सहित कई महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में हिस्सा लेना है। ऐसे में टीम प्रबंधन उनके कार्यभार और दीर्घकालिक फिटनेस को ध्यान में रखते हुए कोई जल्दबाजी नहीं करना चाहता।

इस बीच प्रिंस यादव को संभावित बैकअप विकल्प के रूप में देखा जा रहा है। आने वाले दिनों में बुमराह की फिटनेस रिपोर्ट भारतीय टीम की गेंदबाजी रणनीति और अफगानिस्तान सीरीज के लिए अंतिम तैयारियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। अब क्रिकेट जगत की नजर बुमराह के फिटनेस परीक्षण पर टिकी है। टीम प्रबंधन के सामने चुनौती स्पष्ट है—स्टार तेज गेंदबाज की वापसी सुनिश्चित करने के साथ उनकी फिटनेस और भविष्य के महत्वपूर्ण मुकाबलों के बीच संतुलन बनाए रखना।

# चिराग के CM दावे से बिहार NDA में हलचल

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

पटना, 5 सितंबर 2026। बिहार की राजनीति में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) के भीतर मुख्यमंत्री पद को लेकर नई चर्चा ने जोर पकड़ लिया है। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) की ओर से पार्टी अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान को बिहार का मुख्यमंत्री बनाने की इच्छा सार्वजनिक किए जाने के बाद राजनीतिक गलियारों में हलचल तेज हो गई है।

पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं विधायक राजू तिवारी और प्रदेश अध्यक्ष सुरेंद्र विवेक ने चिराग पासवान की मौजूदगी में आयोजित कार्यक्रम में कहा कि पार्टी संगठन को मजबूत करते हुए आगामी विधानसभा चुनाव में लोजपा (रामविलास) की सरकार बनाने और चिराग पासवान को मुख्यमंत्री बनाने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रही है। हालांकि, इस बयान को फिलहाल पार्टी की राजनीतिक महत्वाकांक्षा और संगठनात्मक संदेश के रूप में ही देखा जा रहा है। इससे यह निष्कर्ष निकालना जल्दबाजी होगा कि NDA में मुख्यमंत्री पद को लेकर कोई औपचारिक निर्णय हो गया है या वर्तमान मुख्यमंत्री के चेहरे में बदलाव तय है। NDA के भीतर बयान ने बढ़ाई चर्चा लोजपा (रामविलास) NDA का घटक दल है। ऐसे में गठबंधन के एक प्रमुख सहयोगी दल की ओर से अपने नेता को मुख्यमंत्री बनाने की सार्वजनिक मांग राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण मानी जा रही है। चिराग पासवान की पार्टी का दावा ऐसे समय सामने आया है, जब बिहार में गठबंधन के भीतर विभिन्न मुद्दों को लेकर नेताओं के बीच बयानबाजी भी चर्चा में रही है। चिराग पासवान और हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (HAM) के प्रमुख जीतन राम मांझी के बीच आरक्षण जैसे मुद्दों पर सामने आए अलग-अलग रुख ने भी राजनीतिक चचाओं को हवा दी है। हालांकि, मुख्यमंत्री पद को लेकर लोजपा (रामविलास) के बयान को सीधे तौर पर मांझी के साथ किसी कथित मतभेद का परिणाम मानना अभी प्रमाणित नहीं है। इसके पीछे पार्टी की अपनी राजनीतिक रणनीति और संगठन विस्तार की कोशिश भी हो सकती है। राजू तिवारी ने क्या कहा? लोजपा (रामविलास) के राष्ट्रीय महासचिव राजू तिवारी ने पार्टी कार्यकर्ताओं के सामने चिराग पासवान के नेतृत्व में संगठन को मजबूत करने और आगामी चुनाव में पार्टी की सरकार बनाने की बात कही।

# नशे के खिलाफ पंजाब में नागरिक बने प्रहरी

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

चंडीगढ़, 5 सितंबर 2026। पंजाब में नशे के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में आम नागरिकों की भागीदारी सुरक्षा और कानून प्रवर्तन एजेंसियों के लिए महत्वपूर्ण सहयोग के रूप में सामने आई है। राज्य सरकार के युद्ध नशेआं विरुद्धह्न अभियान के तहत नागरिकों से प्राप्त गुप्त सूचनाओं के आधार पर बड़ी संख्या में गिरफ्तारियां की गई हैं। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, 1 मार्च 2025 से 3 सितंबर 2026 तक 51,979 गुप्त सूचनाएं प्राप्त हुईं, जिनके आधार पर कार्रवाई करते हुए 25,339 लोगों को गिरफ्तार किया गया। ये सूचनाएं सेफ पंजाब हेल्पलाइनह्न के माध्यम से पुलिस और संबंधित एजेंसियों तक पहुंचीं। अधिकारियों के अनुसार, इन सूचनाओं से नशीले पदार्थों की तस्करी और उससे जुड़ी गतिविधियों की पहचान करने में मदद मिली। यह पहल इस दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जा रही है कि नशे के खिलाफ अभियान में केवल सरकारी एजेंसियां ही नहीं, बल्कि नागरिक भी सूचना तंत्र का हिस्सा बन रहे हैं। बड़ी मात्रा में नशीले पदार्थ बरामद अभियान के दौरान नशीले पदार्थों की बरामदगी के आंकड़े भी कार्रवाई के व्यापक स्तर को दर्शाते हैं। एजेंसियों के अनुसार इस अवधि में 3,757 किलोग्राम हेरोइन, 964 किलोग्राम अफीम, 45 टन पोस्त की भूसी, 1,288 किलोग्राम गांजा और 71 किलोग्राम मेथामफेटामाइन बरामद किया गया। इसके अलावा एनडीपीएस अधिनियम के तहत 62 लाख टैबलेट और कैप्सूल भी जब्त किए गए। अधिकारियों के अनुसार, कार्रवाई का दायरा केवल छोटे स्तर पर नशीले पदार्थ बेचने

वालों तक सीमित नहीं रहा। दो किलोग्राम से अधिक हेरोइन से जुड़े मामलों में 696 कथित बड़े तस्करों की गिरफ्तारी भी की गई। इससे नशीले पदार्थों की आपूर्ति करने वाले बड़े नेटवर्क पर कार्रवाई की दिशा में पुलिस के प्रयासों को संकेत मिलता है। अवैध कारोबार की वित्तीय कड़ी पर भी प्रहार नशे के कारोबार के आर्थिक नेटवर्क को कमजोर करने के लिए भी कार्रवाई की गई है। अभियान के दौरान नशीले पदार्थों की बिक्री से अर्जित अथवा अवैध खरीद, बिक्री, वितरण और तस्करी के लिए रखी गई करीब 22 करोड़ रुपये की राशि जब्त किए जाने की जानकारी दी गई है। इसके साथ ही व्यावसायिक मात्रा में नशीले पदार्थों से संबंधित 2,675 मामले दर्ज किए गए हैं। कानून प्रवर्तन की दृष्टि से यह पहल महत्वपूर्ण है, क्योंकि नशीले पदार्थों की आपूर्ति श्रृंखला को कमजोर करने के लिए उसके वित्तीय स्रोतों पर कार्रवाई भी आवश्यक होती है।

DGP ने नागरिकों की भूमिका को सराहा पंजाब के पुलिस महानिदेशक गौरव यादव ने नागरिकों से मिली गुप्त सूचनाओं को एंटी-नारकोटिक्स टास्क फोर्स के लिए अतिरिक्त मजबूती बताया। उन्होंने उम्मीद जताई कि आने वाले समय में नागरिकों की ओर से सूचना देने और उसके आधार पर होने वाली कार्रवाई में और बढ़ोतरी होगी। एडीजीपी एएनटीएफ पंजाब नीलाभ किशोर के अनुसार, आंकड़े बताते हैं कि नशा विरोधी अभियान में कानूनी कार्रवाई के साथ नागरिकों से मिलने वाली खुफिया जानकारी का उपयोग भी बढ़ रहा है। उनके मुताबिक, हेल्पलाइन पर प्राप्त लगभग 52 हजार सूचनाएं इस बात का संकेत हैं कि आम नागरिक नशे के खिलाफ कार्रवाई में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। अभियान का दूसरा पक्ष—इलाज और पुनर्वास नशे के खिलाफ लड़ाई केवल तस्करों और आपूर्तिकर्ताओं पर कानूनी कार्रवाई तक सीमित नहीं है।

## आज का संदेश

# श्रीकृष्ण से सीखें मुक्त होकर जीने की कला

भारत की सनातन सांस्कृतिक चेतना में अनेक अवतारों, ऋषियों, संतों और महापुरुषों का स्मरण श्रद्धा के साथ किया जाता है। इन सभी महान व्यक्तित्वों ने मानव समाज को अपने-अपने ढंग से जीवन का मार्ग दिखाया है। किंतु भगवान श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व अपनी विराटता, बहुआयामी प्रतिभा और जीवन के प्रति सहज दृष्टि के कारण विशिष्ट दिखाई देता है। वे केवल एक धार्मिक आस्था के केंद्र नहीं, बल्कि जीवन को उसकी संपूर्णता में स्वीकार करने की प्रेरणा भी हैं। श्रीकृष्ण का जीवन आरंभ से ही संघर्षों से जुड़ा रहा। उनका जन्म कारागार में हुआ, जहां भय, अत्याचार और असुरक्षा का वातावरण था। किंतु बंधन में जन्म लेने के बावजूद उन्होंने बंधनों को अपनी नियति नहीं बनने दिया। उनका जीवन इस सत्य का प्रतीक है कि परिस्थितियां मनुष्य को घेर सकती हैं, लेकिन उसके मन और विचारों को तब तक कैद नहीं कर सकतीं, जब तक वह स्वयं हार स्वीकार न कर ले। आज के समय में यह संदेश विशेष रूप से प्रासंगिक है। आधुनिक मनुष्य भले ही कारागार में न हो, लेकिन वह अनेक अदृश्य बंधनों में जकड़ा हुआ है। कोई भय से बंधा है, कोई असफलता से, कोई आर्थिक चिंताओं से और कोई समाज की अपेक्षाओं से। श्रीकृष्ण का जीवन हमें प्रेरित करता है कि परिस्थितियों को स्वीकार करें, लेकिन उनके सामने अपनी चेतना और आत्मविश्वास को समर्पित न करें। जीवन को स्वीकार करने की सीख भगवान श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता जीवन की सहज स्वीकार्यता है। उन्होंने जीवन को जैसा मिला, वैसा ही स्वीकार किया और हर परिस्थिति में अपनी भूमिका का निर्वाह किया। उन्होंने न सुख के समय स्वयं को परिस्थितियों का स्वामी समझा और न संकट के समय जीवन से पलायन किया। यही दृष्टि उनके जीवन को असाधारण बनाती है। मनुष्य का जीवन भी सुख-दुख, सफलता-असफलता और लाभ-हानि से मिलकर बना है। समस्या तब उत्पन्न होती है, जब हम केवल सुख को स्वीकार करते हैं और दुख से भागने लगते हैं। श्रीकृष्ण का जीवन हमें सिखाता है कि जीवन के दोनों पक्षों को स्वीकार करते हुए संतुलन बनाए रखना ही वास्तविक परिपक्वता है। आज के दौर में धैर्य की कमी तेजी से दिखाई देती है। छोटी असफलता व्यक्ति को निराश कर देती है और थोड़ी-सी सफलता अहंकार पैदा कर देती है। ऐसे में श्रीकृष्ण का जीवन संतुलन की सबसे बड़ी शिक्षा देता है। परिस्थितियां बदल सकती हैं, लेकिन हमारा विवेक और आंतरिक संतुलन नहीं बदलना चाहिए। मुस्कुराते हुए संघर्ष करने का संदेश श्रीकृष्ण का जीवन हमें यह भी सिखाता है कि संघर्ष जीवन का अंत नहीं, बल्कि जीवन की यात्रा का एक हिस्सा है। जैसी भी परिस्थिति हो, उसका सामना साहस और पूरे मनोयोग से करना चाहिए। मुस्कुराने का अर्थ समस्याओं से आंखें मूंद लेना नहीं है। वास्तविक मुस्कुराहट वह शक्ति है, जो कठिन समय में भी मनुष्य के भीतर आशा को जीवित रखती है। आज समाज तनाव और प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजर रहा है। हर व्यक्ति किसी न किसी दौड़ में शामिल है। सफलता की चिंता, भविष्य की अनिश्चितता और सामाजिक अपेक्षाएं व्यक्ति की मानसिक शांति को प्रभावित कर रही हैं। ऐसे समय में श्रीकृष्ण का संदेश अत्यंत सरल और प्रभावशाली है–स्थिति से भागो मत, उसका सामना करो। कठिनाई के सामने धैर्य, चुनौती के सामने साहस और सफलता के समय विनम्रता ही जीवन को संतुलित बनाती है। एक व्यक्तित्व, अनेक आयाम भगवान श्रीकृष्ण को किसी एक भूमिका में सीमित नहीं किया जा सकता। यही उनके व्यक्तित्व की विराटता है। वे ज्ञानी हैं, लेकिन केवल ज्ञान की बातें करने वाले नहीं; वे कर्म के महत्व को भी समझाते हैं। वे राजनीति के प्रतीक हैं, तो धर्म और न्याय के लिए संघर्ष करने वाले योद्धा भी हैं। वे योगी हैं, लेकिन संसार से दूर नहीं भागते। वे राजा हैं, लेकिन सत्ता के अहंकार में नहीं डूबते। वे मित्र हैं तो सच्ची मित्रता के आदर्श हैं और प्रेम के प्रतीक भी हैं। उनका जीवन यह संदेश देता है कि जीवन को किसी एक आयाम में सीमित नहीं करना चाहिए। मनुष्य को ज्ञानवान होने के साथ संवेदनशील भी होना चाहिए। सफल होने के साथ विनम्र भी और शक्तिशाली होने के साथ न्यायप्रिय भी। आज के समाज में विशेषज्ञता का महत्व दिया जाता है, लेकिन श्रीकृष्ण का जीवन हमें संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण की प्रेरणा देता है। गोकुल की सहजता से द्वारिका की जिम्मेदारी तक श्रीकृष्ण के जीवन की सबसे सुंदर विशेषता यह है कि परिस्थितियां बदलती रहीं, लेकिन उनके भीतर की सहजता और प्रसन्नता बनी रही। गोकुल और वृंदावन में वे ग्वालबालों के साथ सामान्य जीवन जीते हैं। वहां उनका जीवन आनंद, प्रेम और प्रकृति के निकटता से भरा हुआ दिखाई देता है। बाद में वही श्रीकृष्ण द्वारिका के शासक बनते हैं। उनके सामने शासन, राजनीति, समाज और राज्य की बड़ी जिम्मेदारियां आती हैं। लेकिन सत्ता और वैभव उनके स्वभाव की सहजता को समाप्त नहीं करते। यह संदेश आज के समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मनुष्य अक्सर परिस्थितियों के साथ बदल जाता है। अभाव में उसका व्यवहार अलग होता है और संपन्नता आने पर अलग। पद मिलने के बाद वह अपने पुराने संबंधों को भूल जाता है। श्रीकृष्ण का जीवन बताता है कि सफलता और सत्ता का अर्थ अपने स्वभाव और मानवीयता को खो देना नहीं है। गोकुल में ग्वालबाल और द्वारिका में द्वारिकाधीश–दोनों स्थितियों में आनंद और सहजता बनाए रखना ही जीवन की वास्तविक सफलता है। पूर्वाग्रह से मुक्त जीवन-दृष्टि श्रीकृष्ण के जीवन में व्यापकता दिखाई देती है। उनके संबंध किसी जाति, वर्ग, पद या प्रतिष्ठा की सीमाओं में नहीं बंधे थे। सुदामा से उनकी मित्रता इसका सुंदर उदाहरण मानी जाती है। निर्धन मित्र के प्रति उनका व्यवहार यह संदेश देता है कि व्यक्ति का मूल्य उसकी आर्थिक स्थिति से नहीं, बल्कि उसके मानवीय गुणों से होना चाहिए। आज समाज में पूर्वाग्रह अनेक रूपों में मौजूद हैं। हम लोगों को उनकी भाषा, पहनावे, पद, धन और सामाजिक पहचान के आधार पर आंकने लगते हैं। श्रीकृष्ण का जीवन हमें सिखाता है कि जीवन को संकीर्ण दृष्टि से नहीं देखना चाहिए। मनुष्य के प्रति सम्मान और संबंधों में आत्मीयता ही समाज को बेहतर बना सकती है। विषाद से प्रसाद तक की यात्रा श्रीकृष्ण के जीवन का सबसे गहरा दर्शन महाभारत और भगवद्गीता के माध्यम से सामने आता है। कुरुक्षेत्र में अर्जुन विषाद और भ्रम की स्थिति में खड़े हैं। उनके सामने कर्तव्य, संबंध और युद्ध का कठिन प्रश्न है। ऐसे समय में श्रीकृष्ण उन्हें जीवन और कर्म का मार्ग समझाते हैं। यह संवाद केवल अर्जुन के लिए नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए है, जो जीवन में कभी भ्रमित और निराश होता है। विषाद से प्रसाद तक की यात्रा का अर्थ है–भ्रम से समझ तक, भय से साहस तक और निराशा से कर्तव्य तक पहुंचना। जब व्यक्ति अपने उद्देश्य को पहचानता है और निष्काम भाव से अपने कर्तव्य का पालन करता है, तब उसका विषाद दूर होने लगता है। आज भी जीवन की अनेक समस्याओं के बीच यही संदेश हमें मार्ग दिखा सकता है। आज के समाज में लोगों के लिए सबसे बड़ी समस्या वर्तमान समय में तकनीक और सुविधाएं बढ़ी हैं, लेकिन मनुष्य की बेचैनी भी बढ़ी है। सुविधाएं मिल गई हैं, लेकिन कई बार शांति नहीं है। संपर्कों की संख्या बढ़ी है, लेकिन आत्मीय संबंध कम होते जा रहे हैं। ऐसे समय में श्रीकृष्ण का जीवन संतुलन की एक नई दृष्टि प्रदान करता है। वे हमें सिखाते हैं कि जीवन में संघर्ष हो तो उससे भागना नहीं चाहिए। सफलता मिले तो अहंकार नहीं करना चाहिए। संबंध हों तो उन्हें स्वार्थ से ऊपर उठकर निभाना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि परिस्थितियों के कारण अपने भीतर की प्रसन्नता को समाप्त नहीं होने देना चाहिए। प्रसन्नता कोई बाहरी वस्तु नहीं, बल्कि जीवन को देखने की एक दृष्टि है। निष्कर्ष: मुक्त चेतना का जीवन भगवान श्रीकृष्ण का जीवन हमें यह संदेश देता है कि मनुष्य परिस्थितियों से बंधा हो सकता है, लेकिन उसकी चेतना को बंधन नहीं रोक सकता। जीवन में सुख आएंगे और दुख भी आएंगे। सफलता मिलेगी और असफलताएं भी सामने आएंगी। लेकिन इन सबके बीच जो व्यक्ति अपने कर्तव्य, विवेक और आंतरिक संतुलन को बनाए रखता है, वही वास्तविक अर्थों में जीवन जीता है। श्रीकृष्ण का संदेश हमें जीवन से भागने को नहीं, बल्कि उसे पूरी शक्ति और सहजता के साथ स्वीकार करने का संदेश देता है। बंधन में जन्म लेकर भी मुक्त होकर जीना, संघर्षों में मुस्कुराना, सफलता में सहज रहना और हर परिस्थिति में अपने कर्तव्य का पालन करना–यही श्रीकृष्ण के जीवन का सार है। वास्तव में, श्रीकृष्ण हमें केवल धर्म का मार्ग नहीं दिखाते, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाते हैं। उनका जीवन आज भी यही संदेश देता है–परिस्थितियां कैसी भी हों, अपने भीतर के आनंद को जीवित रखिए, पूर्वाग्रहों से मुक्त रहिए और पूरे मनोयोग से जीवन की हर चुनौती का सामना कीजिए। यही विषाद से प्रसाद तक की यात्रा है और यही श्रीकृष्ण के विराट व्यक्तित्व का शाश्वत संदेश भी।

# बडगाम की मुठभेड़: एक आतंकी के खात्मे से आगे की चुनौती

**भारतार्थ खबर**
**Bhaarataarth.com**

जम्मू-कश्मीर के बडगाम जिले के ऊपरी और घने वन क्षेत्र में सुरक्षा बलों की संयुक्त कार्रवाई ने एक बार फिर यह स्पष्ट किया है कि आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई केवल सीमावर्ती क्षेत्रों तक सीमित नहीं है। अशदर गली में सेना, जम्मू-कश्मीर पुलिस और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (उफ्द्धत्र) की संयुक्त तलाशी कार्रवाई के दौरान एक आतंकी मारा गया और उसके पास से एके सीरीज की राइफल तथा अन्य युद्ध सामग्री बरामद की गई। अभियान विशिष्ट खुफिया सूचना के आधार पर शुरू किया गया था और प्रारंभिक रिपोर्टों के अनुसार कार्रवाई के बाद भी इलाके में तलाशी जारी रही। बाद की रिपोर्टों में मारे गए आतंकी की पहचान पाकिस्तानी नागरिक यासिर के रूप में किए जाने और उसके लश्कर-ए-तैयबा से कथित संबंधों का उल्लेख सामने आया है। कुछ रिपोर्टों ने उसे 2024 में जम्मू-कश्मीर में हुई आतंकी घटनाओं से भी जोड़ा है। हालांकि ऐसे गंभीर आरोपों के संदर्भ में जांच एजेंसियों द्वारा उपलब्ध कराए गए साक्ष्यों और आधिकारिक पुष्टि को ही अंतिम आधार माना जाना चाहिए। यही पत्रकारिता की निष्पक्षता और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मामलों में जिम्मेदार रिपोर्टिंग की पहली कसौटी है। खुफिया सूचना से मिली सफलता अशदर गली में हुई कार्रवाई का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि सुरक्षा बलों ने किसी व्यापक अंधाधुंध अभियान के बजाय विशिष्ट खुफिया सूचना के आधार पर संयुक्त तलाशी अभियान शुरू किया। सेना के चिनार कोर के अनुसार, संदिग्ध गतिविधि दिखाई देने के बाद आतंकियों को चुनौती दी गई और जवाब में गोलीबारी शुरू हुई, जिसके बाद मुठभेड़ हुई। एक आतंकी मारा गया और हथियार बरामद किया गया। आतंकवाद के बदलते स्वरूप में ऐसी खुफिया आधारित कार्रवाई का महत्व बहुत अधिक है। आतंकियों की आवाजाही, संपर्कों, हथियारों की आपूर्ति और सुरक्षित ठिकानों की जानकारी समय रहते मिल जाए तो सुरक्षा बल संभावित हमले को उसके प्रारंभिक चरण में ही रोक सकते हैं। इस दृष्टि से बडगाम की कार्रवाई केवल एक मुठभेड़ नहीं, बल्कि खुफिया तंत्र, स्थानीय पुलिस और केंद्रीय सुरक्षा बलों के बीच समन्वय की परीक्षा भी है। किसी भी आतंकवाद विरोधी अभियान की




सफलता केवल मारे गए आतंकियों की संख्या से नहीं मापी जानी चाहिए, बल्कि इस बात से भी आंकी जानी चाहिए कि उससे आतंकवादी नेटवर्क की क्षमता कितनी कमजोर हुई और भविष्य में होने वाली हिंसा को कितनी दूर तक रोका जा सका। पहाड़ और जंगल की चुनौती कश्मीर के ऊपरी हिस्सों में घने जंगल, दुर्गम पहाड़ियां और कठिन भौगोलिक परिस्थितियां सुरक्षा अभियानों को जटिल बना देती हैं। अशदर गली भी ऐसे ही क्षेत्रों में आता है। रिपोर्टों के अनुसार यह इलाका मध्य कश्मीर के ऊंचाई वाले क्षेत्र में है और इसके आसपास घने वन क्षेत्र हैं। ऐसे स्थानों में आतंकियों के लिए छिपना और सुरक्षा घेरा तोड़कर निकलने का प्रयास करना अपेक्षाकृत आसान हो सकता है। यही कारण है कि एक आतंकी के मारे जाने के बाद भी तलाशी अभियान जारी रखना आवश्यक होता है। सुरक्षा बलों को यह सुनिश्चित करना पड़ता है कि इलाके में कोई अन्य सशस्त्र व्यक्ति मौजूद न हो और कोई हथियार, गोला-बारूद अथवा अन्य सामग्री छिपी न रह जाए। इस संदर्भ में अभियान को जल्दबाजी में समाप्त करने के बजाय पूरी तरह सुरक्षित बनाना अधिक महत्वपूर्ण है। आतंकवाद विरोधी अभियान में धैर्य और सटीकता, दोनों की आवश्यकता होती है। यासिर की पहचान और पुराने मामलों की जांच यदि मारे गए आतंकी की पहचान यासिर के रूप में आधिकारिक जांच में पुष्ट होती है और उसके पुराने आतंकी मामलों से संबंध स्थापित होते हैं, तो सुरक्षा एजेंसियों के लिए यह कार्रवाई और अधिक महत्वपूर्ण हो सकती है। किसी सक्रिय आतंकी की पहचान केवल उसके नाम तक सीमित नहीं होती। उसके संपर्कों, आवाजाही, हथियारों के स्रोत, सीमा पार से मिलने वाली सहायता और स्थानीय स्तर पर संभावित सहयोगियों की जांच भी उतनी ही आवश्यक होती है। रिपोर्टों में यासिर को 2024 में जम्मू-कश्मीर में हुई कुछ आतंकी घटनाओं से जोड़ने का दावा किया गया है। इनमें पुंछ में भारतीय वायुसेना के काफिले पर हमला तथा सोनमर्ग और गुलमर्ग से जुड़ी घटनाओं का उल्लेख किया गया है। इन संबंधों की अंतिम पुष्टि जांच एजेंसियों के साक्ष्यों और आधिकारिक निष्कर्षों से ही होनी चाहिए। यही वह बिंदु है जहां आतंकवाद विरोधी अभियान को केवल एक आतंकी मारा गयाह्न की खबर से आगे ले जाने की आवश्यकता है। यदि किसी आतंकी की पहचान पुराने मामलों से जुड़ती है, तो उसके नेटवर्क की कड़ियां खोज निकालना सुरक्षा एजेंसियों की अगली बड़ी प्राथमिकता होनी चाहिए। पाकिस्तान से जुड़े नेटवर्क पर निगाह जरूरी जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद की समस्या का एक महत्वपूर्ण पहलू सीमा पार से मिलने वाला समर्थन है। यदि किसी आतंकवादी के पाकिस्तानी नागरिक होने और प्रतिबंधित संगठन से संबंध की पुष्टि होती है, तो जांच का दायरा स्वाभाविक रूप से सीमा पार के नेटवर्क तक पहुंचता है। लेकिन यहां भी नीति स्पष्ट होनी चाहिए–सुरक्षा एजेंसियों को ठोस खुफिया साक्ष्यों के आधार पर नेटवर्क की पहचान करनी चाहिए और कार्रवाई करनी चाहिए। आतंकवाद के खिलाफ कठोरता आवश्यक है, लेकिन कठोरता का अर्थ अंधी प्रतिक्रिया नहीं है। सटीक सूचना, तकनीकी निगरानी, स्थानीय खुफिया तंत्र और विभिन्न एजेंसियों के बीच समन्वय ही स्थायी सफलता का आधार बन सकते हैं। नागरिक सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता आतंकवाद विरोधी कार्रवाई का अंतिम उद्देश्य केवल आतंकियों को समाप्त करना नहीं, बल्कि नागरिकों के लिए सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करना है। जम्मू-कश्मीर में आम नागरिक लंबे समय से हिंसा और अस्थिरता के दुष्प्रभाव झेलते रहे हैं। इसलिए सुरक्षा बलों की प्रत्येक कार्रवाई में नागरिक सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिए। दुर्गम क्षेत्रों में चलने वाले अभियानों के दौरान स्थानीय लोगों की आवाजाही, संपत्ति और सामान्य जनजीवन प्रभावित न हो, इसके लिए भी संवेदनशील और संतुलित दृष्टिकोण जरूरी है। सुरक्षा और नागरिक स्वतंत्रता के बीच संतुलन लोकतांत्रिक व्यवस्था की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। केवल मुठभेड़ नहीं, नेटवर्क पर प्रहार जरूरी बडगाम की कार्रवाई को निश्चित रूप से सुरक्षा बलों की एक महत्वपूर्ण सफलता माना जा सकता है। लेकिन आतंकवाद की चुनौती का स्थायी समाधान किसी एक मुठभेड़ में नहीं छिपा है। आतंकी संगठन तभी कमजोर होंगे जब उनके पूरे पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रहार होगा–भर्ती, वित्तीय सहायता, हथियारों की आपूर्ति, सीमा पार संपर्क, सुरक्षित ठिकाने, संचार व्यवस्था और स्थानीय सहयोगी नेटवर्क, सभी को एक साथ निशाना बनाना होगा। सुरक्षा बलों की कार्रवाई के साथ खुफिया एजेंसियों को यह भी पता लगाना होगा कि मारे गए आतंकी ने किन लोगों से संपर्क किया था, उसके पास हथियार कहां से पहुंचे और क्या उसके पीछे कोई बड़ा नेटवर्क सक्रिय था। ऐसी जानकारी भविष्य की कई संभावित घटनाओं को रोक सकती है। सफलता के साथ सतर्कता भी जरूरी बडगाम में हुई कार्रवाई यह संदेश देती है कि सुरक्षा तंत्र आतंकवादियों की गतिविधियों पर नजर बनाए हुए है और खुफिया जानकारी के आधार पर कार्रवाई करने में सक्षम है। मगर किसी एक सफलता के बाद सुरक्षा व्यवस्था में ढील की कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। आतंकवादी संगठन अपनी रणनीति बदलते रहते हैं। वे नए रास्ते, नए संपर्क और नए साधन तलाश सकते हैं। इसलिए सुरक्षा व्यवस्था को भी लगातार आधुनिक, तकनीकी और खुफिया आधारित बनाना होगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई को केवल सैन्य अभियान के रूप में नहीं देखा जा सकता। यह सुरक्षा, कूटनीति, सामाजिक विश्वास, आर्थिक स्थिरता और प्रभावी प्रशासन से जुड़ी व्यापक चुनौती है। संपादकीय निष्कर्ष बडगाम के अशदर गली क्षेत्र में सुरक्षा बलों की कार्रवाई निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है। एक आतंकी का मारा जाना और हथियारों की बरामदगी तत्काल सुरक्षा की दृष्टि से उपलब्धि है। लेकिन इस उपलब्धि का वास्तविक मूल्य तभी सामने आएगा, जब जांच आगे बढ़कर उस नेटवर्क तक पहुंचे जिसने आतंकवाद को जिंदा रखने में भूमिका निभाई। आतंकवाद के विरुद्ध नीति स्पष्ट होनी चाहिए–न तो आतंक के सामने झुकना, न ही तथ्यों की अनदेखी करना। सुरक्षा बलों की दृढ़ कार्रवाई के साथ खुफिया तंत्र को मजबूत करना, सीमा पार नेटवर्क पर प्रभावी निगरानी रखना और स्थानीय नागरिकों का विश्वास बनाए रखना समान रूप से आवश्यक है। जम्मू-कश्मीर में स्थायी शांति केवल बंदूक की शक्ति से नहीं, बल्कि सुरक्षा, न्याय, विकास और नागरिक विश्वास के मजबूत आधार से स्थापित होगी। बडगाम की कार्रवाई इस व्यापक लड़ाई की एक कड़ी है। अब आवश्यकता इस बात की है कि इस कड़ी से आगे बढ़कर आतंकवाद की पूरी श्रृंखला को तोड़ा जाए और जम्मू-कश्मीर के नागरिकों को भयमुक्त, सुरक्षित और शांतिपूर्ण वातावरण सुनिश्चित किया जाए।

# भारत-चीन सीमा संवाद: भरोसे की राह अभी लंबी

**भारतार्थ खबर अशोक कुमार सिंह**
**Bhaarataarth.com**

भारत और चीन के बीच सीमा विवाद लंबे समय से दोनों देशों के संबंधों की सबसे कठिन परीक्षा बना हुआ है। ऐसे समय में जब पूर्वी लद्दाख के घटनाक्रम के बाद दोनों देशों के बीच सैन्य और कूटनीतिक स्तर पर संवाद लगातार जारी है, उच्चस्तरीय वार्ता के बाद कोर कमांडर स्तर की बातचीत की संभावित तैयारी को एक सकारात्मक संकेत के रूप में देखा जा सकता है। हालांकि, इसे सीमा विवाद के समाधान की दिशा में निर्णायक सफलता मानना अभी जल्दबाजी होगी। भारत-चीन संबंधों में स्थिरता केवल दोनों देशों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे एशिया की शांति और आर्थिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। इसलिए सीमा पर तनाव कम करने की हर कोशिश का स्वागत होना चाहिए, लेकिन उसके साथ यथार्थवादी दृष्टिकोण बनाए रखना भी उतना ही जरूरी है। कूटनीति से सैन्य संवाद तक हाल में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और चीन के विदेश मंत्री वांग यी के बीच विशेष प्रतिनिधि स्तर की बातचीत हुई। इस संवाद में सीमा क्षेत्रों में शांति और स्थिरता बनाए रखने तथा सीमा विवाद से जुड़े मुद्दों पर बातचीत जारी रखने पर जोर दिया गया। अब सैन्य स्तर पर कोर कमांडर स्तर की संभावित बैठक इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का संकेत देती है। सैन्य कमांडरों के बीच सीधा संवाद सीमा पर किसी घटना, गश्त से जुड़े मतभेद या स्थानीय स्तर पर उत्पन्न तनाव को नियंत्रित करने में उपयोगी हो सकता है। सीमा जैसे संवेदनशील क्षेत्र में संवाद की व्यवस्था केवल संकट पैदा होने के बाद सक्रिय होने वाला माध्यम नहीं होनी चाहिए। नियमित और संस्थागत संवाद ही गलतफहमी को गंभीर टकराव में बदलने से रोक सकता है। पूर्वोत्तर सीमा का महत्व भारतीय सेना के स्पीयर कोर का क्षेत्राधिकार पूर्वोत्तर के महत्वपूर्ण हिस्सों से जुड़ा है। अरुणाचल प्रदेश सहित इस क्षेत्र में भारत-चीन सीमा की भौगोलिक परिस्थितियां जटिल हैं। ऐसे इलाकों में छोटी-सी घटना भी राजनीतिक और सैन्य स्तर पर बड़ी चिंता का विषय बन सकती है। इसलिए यदि प्रस्तावित सैन्य बातचीत वास्तव में होती है, तो इसका महत्व केवल दो सैन्य अधिकारियों की बैठक तक सीमित नहीं होगा। यह सीमा प्रबंधन के मौजूदा तंत्र को सक्रिय रखने और स्थानीय स्तर पर संवाद की संभावनाओं को मजबूत करने का माध्यम बन सकती है। हॉटलाइन अच्छी पहल, लेकिन भरोसा उससे बड़ा मुद्दा भारत और चीन के बीच पूर्वी तथा मध्य सेक्टर में नई सैन्य हॉटलाइन और वरिष्ठ सैन्य कमांडरों की बैठक के लिए नए स्थानों की व्यवस्था की बात सामने आई है। आधुनिक सीमा प्रबंधन में इस तरह के संचार माध्यम अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। किसी अप्रत्याशित गतिविधि या घटना के बाद तत्काल संवाद उपलब्ध हो तो स्थिति को समझने और नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है। लेकिन हॉटलाइन अपने आप में विश्वास पैदा नहीं करती। वह केवल विश्वास बहाली का एक उपकरण है। वास्तविक विश्वास तब बनेगा, जब दोनों देश सीमा पर बनी सहमतियों का ईमानदारी से पालन करें, सैनिक गतिविधियों में पारदर्शिता रखें और एक-दूसरे की संवेदनशीलताओं को समझते हुए व्यवहार करें। 2020 के बाद बदले रिश्तों की तस्वीर वर्ष 2020




के बाद भारत-चीन संबंधों में गंभीर तनाव आया। पूर्वी लद्दाख में सैन्य गतिरोध ने दोनों देशों के बीच विश्वास को गहरी चोट पहुंचाई। इसके बाद सैन्य और कूटनीतिक स्तर पर कई दौर की बातचीत हुई और कुछ क्षेत्रों में तनाव कम करने के प्रयास किए गए। लेकिन यह समझना जरूरी है कि तनाव कम होना और सीमा विवाद का समाधान होना दो अलग-अलग बातें हैं। सीमा विवाद ऐतिहासिक, भौगोलिक और रणनीतिक जटिलताओं से जुड़ा है। इसलिए किसी एक बैठक या समझौते से इसका अंतिम समाधान संभव नहीं है। भारत को बातचीत के माध्यम से शांतिपूर्ण समाधान की कोशिश जारी रखनी चाहिए, लेकिन सीमा पर अपनी सैन्य तैयारियों और रणनीतिक क्षमताओं में किसी प्रकार की ढिलाई नहीं बरतनी चाहिए। संवाद और सतर्कता साथ-साथ भारत की विदेश नीति के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि संवाद और राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच संतुलन कैसे कायम रखा जाए। चीन के साथ बातचीत बंद कर देना किसी भी स्थिति में दीर्घकालिक समाधान नहीं हो सकता। दूसरी ओर केवल बातचीत के भरोसे सुरक्षा संबंधी चुनौतियों को नजरअंदाज करना भी उचित नहीं होगा। भारत को स्पष्ट नीति के साथ आगे बढ़ना होगा–जहां आवश्यक हो वहां बातचीत, जहां जरूरी हो वहां कूटनीतिक दबाव और सीमा पर हर परिस्थिति के लिए पर्याप्त सैन्य तैयारी। यह संतुलन इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत और चीन केवल पड़ोसी देश नहीं हैं, बल्कि दोनों एशिया की दो बड़ी शक्तियां हैं। दोनों के बीच तनाव का प्रभाव व्यापार, निवेश, क्षेत्रीय सुरक्षा और पड़ोसी देशों के रणनीतिक वातावरण पर भी पड़ता है। सीमा पर शांति का अर्थ विकास भी है सीमा पर शांति का लाभ केवल सेना को नहीं मिलता। सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले नागरिक भी तनाव की परिस्थितियों से सीधे प्रभावित होते हैं। सड़क, संचार, स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक गतिविधियों के विस्तार के लिए स्थिर वातावरण आवश्यक है। यदि भारत-चीन सीमा पर तनाव नियंत्रित रहता है, तो भारत अपने सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास पर अधिक प्रभावी ढंग से ध्यान दे सकता है। मजबूत सीमा अवसंरचना और स्थानीय आबादी का विकास भी राष्ट्रीय सुरक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस दृष्टि से सीमा पर शांति और राष्ट्रीय सुरक्षा एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि परस्पर पूरक हैं। चीन के साथ संबंधों में व्यावहारिकता जरूरी भारत और चीन के बीच मतभेद केवल सीमा तक सीमित नहीं हैं। व्यापार असंतुलन, रणनीतिक प्रतिस्पर्धा, तकनीकी क्षेत्र, क्षेत्रीय प्रभाव और वैश्विक मंचों पर दोनों देशों की अलग-अलग प्राथमिकताएं भी संबंधों को प्रभावित करती हैं। ऐसी स्थिति में भारत को भावनात्मक प्रतिक्रिया के बजाय दीर्घकालिक राष्ट्रीय हितों पर आधारित व्यावहारिक नीति अपनानी होगी। चीन के साथ जहां सहयोग संभव है, वहां सहयोग और जहां मतभेद हैं, वहां स्पष्ट एवं दृढ़ बातचीत–यही संतुलित रास्ता हो सकता है। संपादकीय दृष्टिकोण भारत-चीन सीमा पर प्रस्तावित कोर कमांडर स्तर की बातचीत को न तो अत्यधिक उत्साह के साथ निर्णायक उपलब्धि माना जाना चाहिए और न ही संदेह की दृष्टि से पूरी तरह खारिज किया जाना चाहिए। इसका वास्तविक मूल्य बैठक के परिणाम और उसके बाद जमीन पर दिखाई देने वाले बदलाव से तय होगा। भारत के लिए प्राथमिकता स्पष्ट होनी चाहिए–सीमा पर शांति, राष्ट्रीय सुरक्षा की मजबूती और वास्तविक नियंत्रण रेखा पर स्थिरता। संवाद इस लक्ष्य को प्राप्त करने का महत्वपूर्ण माध्यम है, लेकिन संवाद के साथ सतर्कता और तैयारी भी अनिवार्य है। नई हॉटलाइन और नए बैठक केंद्र उपयोगी व्यवस्थाएं हो सकती हैं, लेकिन इनकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि दोनों देश इन माध्यमों का कितनी गंभीरता से उपयोग करते हैं। यदि सैन्य और कूटनीतिक संवाद नियमित बना रहता है, सीमा पर तनाव घटता है और बनी सहमतियों का पालन होता है, तो यह विश्वास बहाली की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। अंततः भारत-चीन संबंधों की स्थायी स्थिरता का रास्ता न तो टकराव से निकलेगा और न ही केवल औपचारिक बैठकों से। इसका आधार होगा–स्पष्ट संवाद, पारस्परिक सम्मान, समझौतों का पालन और अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति अडिग प्रतिबद्धता। भारत को शांति की पहल का समर्थन करते हुए अपनी सीमाओं की सुरक्षा और रणनीतिक हितों पर पूरी दृढ़ता बनाए रखनी होगी। यही व्यावहारिक कूटनीति है और यही आने वाले समय की सबसे बड़ी आवश्यकता भी।

# रुपये की छलांग: राहत की खबर, लेकिन आत्मसंतोष का समय नहीं

**भारतार्थ खबर**
**Bhaarataarth.com**

भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए गुरुवार की सुबह एक महत्वपूर्ण आर्थिक संकेत लेकर आई। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया मजबूत होकर करीब 94.30 के स्तर तक पहुंच गया और दो महीने के उच्चतम स्तर को छू लिया। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण विदेशी मुद्रा की रिकॉर्ड आवक और भारतीय रिजर्व बैंक की बाजार में सक्रिय भूमिका मानी जा रही है। ताजा उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, विशेष विदेशी मुद्रा जुटाने वाली योजनाओं के माध्यम से भारत में करीब 136.38 अरब डॉलर की विदेशी मुद्रा आई है। इनमें गैर-निवासी भारतीयों की विदेशी मुद्रा जमा का हिस्सा सबसे बड़ा रहा। यह खबर निश्चित रूप से उत्साह पैदा करने वाली है। विदेशी मुद्रा भंडार का मजबूत होना किसी भी उभरती अर्थव्यवस्था के लिए सुरक्षा कवच जैसा होता है। भारत जैसे बड़े आयातक देश के लिए इसका महत्व और बढ़ जाता है, क्योंकि कच्चे तेल, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, औद्योगिक मशीनरी और अनेक आवश्यक वस्तुओं के आयात के भुगतान में डॉलर की आवश्यकता होती है। लेकिन रुपये की मौजूदा मजबूती को केवल बाजार की विजय मान लेना भी उचित नहीं होगा। इसके पीछे नीतिगत उपाय, प्रवासी भारतीयों की जमा, वैश्विक डॉलर की चाल, आरबीआई का हस्तक्षेप और अंतरराष्ट्रीय भू-राजनीतिक परिस्थितियां–सभी एक साथ काम कर रहे हैं। रिकॉर्ड विदेशी मुद्रा भंडार ने बढ़ाई ताकत भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 21 अगस्त को समाप्त सप्ताह में रिकॉर्ड करीब 729.33 अरब डॉलर तक पहुंच गया था। पिछले कई सप्ताह से इसमें लगातार वृद्धि दर्ज की गई। यह स्थिति भारत की बाहरी आर्थिक मजबूती के लिए महत्वपूर्ण है। जून में भारतीय रिजर्व बैंक ने विदेशी मुद्रा के प्रवाह को बढ़ाने के लिए कई उपाय किए थे। इनमें बैंकों को विदेशी मुद्रा जमा जुटाने के लिए प्रोत्साहन और विदेशी उधारी से जुड़े कुछ प्रावधान शामिल थे। इन कदमों का उद्देश्य केवल रुपये को तत्काल सहारा देना नहीं था, बल्कि देश के भुगतान संतुलन और विदेशी मुद्रा भंडार को मजबूत करना भी था। अगस्त के अंत तक इन उपायों के तहत अपेक्षा से कहीं अधिक विदेशी मुद्रा जुटाई गई। यहां एक महत्वपूर्ण तथ्य समझना जरूरी है। विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ना और रुपये का मजबूत होना एक-दूसरे से जुड़े जरूर हैं, लेकिन दोनों का अर्थ यह नहीं कि भारतीय मुद्रा की सभी कमजोरियां समाप्त हो गई हैं। रुपये की मजबूती का आम आदमी से क्या संबंध? अर्थव्यवस्था की जटिल शब्दावली के बीच आम नागरिक के लिए सबसे बड़ा सवाल यही है कि रुपये की मजबूती से उसे क्या मिलेगा? सबसे सीधा असर आयात की लागत पर पड़ सकता है। यदि रुपया अपेक्षाकृत मजबूत रहता है और अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें नियंत्रण में रहती हैं, तो भारत का तेल आयात बिल कम करने में मदद मिल सकती है। इससे मुद्रास्फीति के दबाव को सीमित करने में सहायता मिल सकती है। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का एक बड़ा हिस्सा आयात से पूरा करता है। इसलिए डॉलर की तुलना में रुपये की कमजोरी पेट्रोलियम और अन्य आयातित वस्तुओं को महंगा कर सकती है। इसके विपरीत रुपये की मजबूती आयातकों को कुछ राहत देती है। लेकिन इसका दूसरा पहलू भी है। मजबूत रुपया निर्यातकों के लिए हमेशा लाभकारी नहीं होता। भारतीय वस्तुएं और सेवाएं विदेशी खरीदारों के लिए अपेक्षाकृत महंगी हो सकती हैं। आईटी सेवाओं, कपड़ा, चमड़ा, इंजीनियरिंग उत्पाद और अन्य निर्यात क्षेत्रों पर इसका प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए किसी भी सरकार और केंद्रीय बैंक के लिए लक्ष्य केवल बहुत मजबूत रुपया नहीं, बल्कि स्थिर और आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप रुपया होना चाहिए। क्या यह मजबूती टिकाऊ है? यही इस समय सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है। रिकॉर्ड विदेशी मुद्रा प्रवाह निश्चित रूप से आरबीआई की क्षमता बढ़ाता है। लेकिन विदेशी मुद्रा के इन प्रवाहों का एक हिस्सा ऐसी जमा और उधारी से आया है, जिनसे भविष्य में विदेशी मुद्रा में भुगतान संबंधी दायित्व भी बनते हैं। आरबीआई के आंकड़ों पर आधारित रिपोर्टों के अनुसार, इन योजनाओं से जुड़ी बड़ी राशि तीन से पांच वर्ष की अवधि के लिए जुटाई गई है और केंद्रीय बैंक की फॉरवर्ड विदेशी मुद्रा स्थिति भी बढ़ी है। इसलिए इसे देश की स्थायी विदेशी आय समझना भूल होगी। यह आर्थिक सुरक्षा को मजबूत करने वाला महत्वपूर्ण संसाधन है, लेकिन इसका एक हिस्सा भविष्य की देनदारी भी पैदा करता है। यही कारण है कि रुपये की मौजूदा मजबूती को देखकर यह निष्कर्ष निकालना जल्दबाजी होगा कि अब भारतीय मुद्रा लगातार ऊपर ही जाएगी। कच्चा तेल सबसे बड़ी चुनौती भारत की मुद्रा के सामने सबसे बड़ा बाहरी जोखिम फिलहाल अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा बाजार हो सकता है। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच कच्चे तेल की कीमतों में तेजी आई है। ताजा बाजार रिपोर्टों के अनुसार, ब्रेंट कच्चे तेल की कीमत इस सप्ताह करीब सात प्रतिशत तक बढ़ी है। भारत जैसे बड़े तेल आयातक देश के लिए लंबे समय तक ऊंची तेल कीमतें व्यापार घाटे और मुद्रास्फीति दोनों पर दबाव बढ़ा सकती हैं। यदि तेल महंगा होता है, तो डॉलर की मांग बढ़ती है। यदि उसी समय वैश्विक निवेशक अमेरिकी संपत्तियों की ओर अधिक आकर्षित होते हैं, तो उभरती अर्थव्यवस्थाओं की मुद्राओं पर दबाव बढ़ सकता है। इसलिए रुपये की मजबूती की असली परीक्षा किसी एक दिन के कारोबार में नहीं, बल्कि आने वाले महीनों में होगी। अमेरिकी ब्याज दरें भी निर्णायक अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजार में अमेरिका की मौद्रिक नीति का प्रभाव भारत से लेकर दुनिया के अधिकांश देशों तक दिखाई देता है। यदि अमेरिकी फेडरल रिजर्व ब्याज दर बढ़ाता है या बाजार में ऐसी आशंका मजबूत होती है, तो डॉलर और अमेरिकी बॉन्ड आकर्षक हो सकते हैं। इससे उभरते बाजारों से पूंजी निकलने का दबाव बढ़ सकता है। ताजा बाजार आकलनों में अमेरिकी ब्याज दरों को लेकर अनिश्चितता बनी हुई है। ऐसे माहौल में भारत के लिए बड़ा विदेशी मुद्रा भंडार निश्चित रूप से सुरक्षा प्रदान करता है, लेकिन वैश्विक पूंजी के रुख को पूरी तरह नियंत्रित करना किसी केंद्रीय बैंक के हाथ में नहीं होता। आरबीआई की भूमिका महत्वपूर्ण, लेकिन सीमित रुपये के हालिया प्रदर्शन में भारतीय रिजर्व बैंक की भूमिका भी महत्वपूर्ण रही है। बाजार में डॉलर की खरीद-बिक्री के माध्यम से केंद्रीय बैंक अत्यधिक उतार-चढ़ाव को सीमित करने का प्रयास करता है। ताजा बाजार रिपोर्टों में आरबीआई द्वारा डॉलर की बिक्री बढ़ाने का उल्लेख किया गया है। यह हस्तक्षेप भारतीय अर्थव्यवस्था को अचानक आने वाले बाहरी झटकों से बचाने में उपयोगी है। लेकिन केंद्रीय बैंक का उद्देश्य किसी मुद्रा को कृत्रिम रूप से हमेशा मजबूत रखना नहीं हो सकता। उसकी प्राथमिकता बाजार में व्यवस्थित परिस्थितियां, वित्तीय स्थिरता और अत्यधिक अस्थिरता से बचाव होना चाहिए। अर्थव्यवस्था के लिए स्थिर विनिमय दर कई बार अत्यधिक मजबूत मुद्रा से अधिक उपयोगी होती है। निर्यात और रोजगार की चुनौती को नजरअंदाज न करें रुपये की मजबूती का स्वागत करते समय निर्यात क्षेत्र की चिंता भी समझनी होगी। भारत को अगले दशक में रोजगार सृजन, विनिर्माण विस्तार और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके लिए निर्यात प्रतिस्पर्धा महत्वपूर्ण है। यदि रुपया बहुत तेजी से मजबूत होता है, तो कुछ निर्यातकों के लिए कीमतों की प्रतिस्पर्धा कठिन हो सकती है। इसलिए मुद्रा नीति को केवल महंगाई या विदेशी मुद्रा भंडार के नजरिये से नहीं देखा जाना चाहिए। इसमें निर्यात, रोजगार, औद्योगिक उत्पादन और व्यापार संतुलन भी शामिल होने चाहिए। भारत के लिए असली लक्ष्य क्या होना चाहिए?

# गाय पूजा से शुरू पदयात्रा, विजयेंद्र ने साधा कांग्रेस पर निशाना

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

कराटागी, 5 सितंबर 2026। कर्नाटक भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र ने कृष्णाष्टमी के अवसर पर गोपूजन के साथ अपनी पदयात्रा के चौथे दिन की शुरूआत की। किसानों, ग्रामीणों, मजदूरों, महिलाओं और युवाओं की समस्याओं को सामने लाने के उद्देश्य से निकाली जा रही यह पदयात्रा करीब 22 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद कराटागी में संपन्न हुई। पदयात्रा के दौरान भाजपा कार्यकताओं के साथ बड़ी संख्या में किसान, महिलाएं, युवा और स्थानीय नागरिक शामिल हुए। कोप्पल जिले में प्रवेश के दौरान विभिन्न स्थानों पर विजयेंद्र का स्वागत किया गया। कई जगह महिलाओं ने पूर्णकुंभ से स्वागत किया, जबकि समर्थकों ने फूलों की वर्षा और मालाओं से उनका अभिनंदन किया। विजयेंद्र ने रास्ते में ग्रामीणों से सीधे संवाद कर उनकी समस्याएं सुनीं। लोगों ने पेंशन, रोजगार, सिंचाई, बिजली, शिक्षा और अन्य स्थानीय मुद्दों से संबंधित आवेदन एवं शिकायतें उनके समक्ष रखीं। कांग्रेस सरकार पर लगाए आरोप सिंधनूर में कार्यकताओं और लोगों को संबोधित करते हुए विजयेंद्र ने कांग्रेस सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार पांच गारंटी योजनाओं के प्रचार में व्यस्त है, जबकि गरीब, बुजुर्ग और दिव्यांग वर्ग से जुड़े लोगों की सामाजिक सुरक्षा पेंशन समय पर नहीं मिल रही है। उन्होंने दावा किया कि पेंशन में देरी के कारण कई जरूरतमंद परिवारों को दैनिक खर्च, दवाइयों और भोजन तक के लिए कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। विजयेंद्र ने कहा कि सरकारी योजनाओं का वास्तविक लाभ पात्र लोगों तक समय पर पहुंचना चाहिए। उन्होंने गंगा कल्याण योजना में देरी, ग्रामीण क्षेत्रों में आवास, पेयजल, बिजली और बुनियादी ढांचे से जुड़ी समस्याओं का भी उल्लेख किया। हालांकि, ये आरोप भाजपा प्रदेश अध्यक्ष के राजनीतिक वक्तव्य हैं और सरकार की ओर से इन आरोपों पर प्रतिक्रिया इस वक्तव्य में उपलब्ध नहीं है। किसानों की समस्याओं पर सरकार को घेरा पदयात्रा के दौरान विजयेंद्र ने एक किसान द्वारा लाई गई नई धान कटाई मशीन को हरी झंडी दिखाई। किसानों से चर्चा करते हुए उन्होंने खेती में बढ़ते खर्च, मजदूरों की कमी, फसल के दामों में अनिश्चितता और सिंचाई संबंधी

समस्याओं को प्रमुख मुद्दा बताया। उन्होंने कहा कि किसानों की स्थिति में सुधार केवल घोषणाओं से नहीं, बल्कि प्रभावी नीतियों और बजट प्रावधानों से होना चाहिए। किसानों को गुणवत्तापूर्ण बीज, खाद, पर्याप्त बिजली, सिंचाई, फसल बीमा और उचित बाजार मूल्य उपलब्ध कराने की आवश्यकता पर उन्होंने जोर दिया। छोटे और सीमांत किसानों को कृषि उपकरण उपलब्ध कराने के लिए सब्सिडी तथा आसान ऋण की सुविधा बढ़ाने की मांग भी उन्होंने उठाई। APMC व्यापारियों से संवाद सिंधनूर के निकट विजयेंद्र ने कृषि उपज मंडी समिति (APMC) के व्यापारियों से भी बातचीत की। व्यापारियों ने दुकान एवं भूमि हस्तांतरण से जुड़े अतिरिक्त शुल्क, लाइसेंस, दस्तावेज, बैंक ऋण और ब्याज दरों से संबंधित समस्याएं उनके सामने रखीं। विजयेंद्र ने पारदर्शी नियमों, सरल प्रशासनिक व्यवस्था और कम ब्याज वाले ऋण की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने देवराज उर्स सब्जी मंडी में पेयजल, शौचालय, कैंटीन, स्वच्छता और पार्किंग जैसी सुविधाओं की कमी का भी उल्लेख किया। कल्याण कर्नाटक में स्वास्थ्य और रोजगार का मुद्दा भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कल्याण कर्नाटक क्षेत्र में चिकित्सकों, शिक्षकों और रोजगार के अवसरों की कमी का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण अस्पतालों में पर्याप्त चिकित्सकीय एवं अन्य स्टाफ नहीं होने से लोगों को इलाज के लिए दूर जाना पड़ता है। उन्होंने ग्रामीण स्कूलों में शिक्षकों और बुनियादी सुविधाओं की कमी को भी चिंता का विषय बताया। विजयेंद्र के अनुसार, रोजगार के पर्याप्त अवसर नहीं होने के कारण बड़ी संख्या में युवा बेंगलुरु, हैदराबाद, गोवा और अन्य शहरों की ओर जा रहे हैं। उन्होंने स्थानीय स्तर पर उद्योग, कृषि आधारित प्रसंस्करण इकाइयों, छोटे कारोबार और कौशल विकास केंद्र स्थापित करने की आवश्यकता बताई। 2028 में भाजपा सरकार का दावा विजयेंद्र ने दावा किया कि 2028 में कर्नाटक में भाजपा की सरकार बनेगी। उन्होंने कहा कि सत्ता में आने पर ग्रामीण विकास, कृषि, सिंचाई, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार को प्राथमिकता दी जाएगी। उन्होंने कहा कि यह पदयात्रा केवल राजनीतिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि किसानों, गरीबों, मजदूरों, महिलाओं, युवाओं और व्यापारियों की समस्याओं को समझने तथा उन्हें सरकार के सामने रखने का माध्यम है। उन्होंने कहा कि विपक्ष के रूप में सरकार की कमियों को सामने रखना और जनता की समस्याओं को विधानसभा में उठाना भाजपा की जिम्मेदारी है। जनता से सीधा संवाद बना पदयात्रा का केंद्र पदयात्रा के दौरान विभिन्न वर्गों के लोगों से मिले प्रतिनिधिमंडलों ने अपनी समस्याएं साझा कीं। किसानों ने फसल मूल्य, सिंचाई और बिजली के मुद्दे उठाए, जबकि महिलाओं ने रोजगार, ऋण और स्वयं सहायता समूहों से जुड़े विषय सामने रखे। युवाओं ने रोजगार, प्रतियोगी परीक्षाओं और कौशल विकास की जरूरत बताई। विजयेंद्र ने अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों से सरकारी योजनाओं की वास्तविक स्थिति की समीक्षा करने और पात्र लाभार्थियों तक उनका लाभ पहुंचाने की अपील की। पदयात्रा में सांसद गोविंद करजोल, पूर्व मंत्री बी. श्रीरामुलु, विधायक महेश तेंगिनाकाई, कृष्णनायक, हलप्पा आचार, पूर्व विधायक बसवराज ददेसुगुरु, राजुगौड़ा शिवनगौड़ा नाइक, नेता हेमलता नाइक, डॉ. बसवराज कवाटागार, कोप्पल जिला भाजपा अध्यक्ष नवीन गुलागन्नावर सहित अन्य नेता एवं कार्यकर्ता मौजूद

# जन्माष्टमी पर भजनों से गूंजा सीरवी भवन

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 5 सितंबर 2026। सीरवी सेवा संघ ट्रस्ट, लिंगराजपुरम, बेंगलुरु के तत्वावधान में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव के अवसर पर भजन-कीर्तन का भव्य एवं भक्तिमय आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर भक्ति एवं आध्यात्मिक वातावरण का आनंद लिया। महोत्सव के दौरान श्रद्धालुओं ने आई माताजी के आरती-दर्शन किए तथा उनके चरणों में शीश नवाकर सुख-समृद्धि, शांति एवं मंगलमय जीवन की कामना की। कार्यक्रम का शुभारंभ गणेश वंदना से हुआ। इसके पश्चात आई माताजी, भेरूजी, बालाजी एवं भगवान श्रीकृष्ण की महिमा से जुड़े अनेक सुंदर भजनों की भावपूर्ण प्रस्तुतियां दी गईं। पुरुष एवं महिला भजन मंडलियों ने अपनी मधुर एवं सुरीली प्रस्तुतियों से श्रद्धालुओं को भक्ति रस में सराबोर कर

दिया। भजनों के दौरान घुंघरू बांधकर पारंपरिक देशी नृत्य की प्रस्तुतियां भी दी गईं, जिसने कार्यक्रम की धार्मिक एवं सांस्कृतिक छटा को और अधिक मनमोहक बना दिया। कार्यक्रम स्थल पर बनाई गई आकर्षक गुफा एवं वाटर फाउंटेन श्रद्धालुओं के विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। सुंदर एवं मनमोहक सजावट के बीच देर रात तक भक्ति गीतों और कीर्तन की स्वर लहरियां सीरवी भवन में गूंजती रहीं। इस अवसर पर संस्था के उपाध्यक्ष नेकाराम गेहलोत, सचिव अबाराम सोनपुरा सहित समाज के अनेक गणमान्य व्यक्ति एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे। सभी ने भगवान श्रीकृष्ण के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। मध्यरात्रि में भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव का उल्लासपूर्वक आयोजन किया गया। जैसे ही श्रीकृष्ण जन्म का शुभ क्षण आया, पूरा परिसर नंद के घर आनंद भयो, जय कन्हैया लाल कीह्न के जयघोष से गूंज उठा। श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह एवं उमंग देखने को मिली। श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के पश्चात श्रद्धालुओं को प्रसादी वितरित की गई। इसी के साथ श्रद्धा, भक्ति और उल्लास से परिपूर्ण श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का समापन हुआ।

# नवग्रहों का संतुलन जरूरी : साध्वी प्रियश्रद्धांजना

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 5 सितंबर 2026। जीवन में सुख-दुख, अनुकूलता और प्रतिकूलता का क्रम निरंतर चलता रहता है। ऐसे में जीवन के विभिन्न पक्षों में संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। श्री जिन कुशल सूरी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट, बसवनगुडी के तत्वावधान में आयोजित चातुर्मासिक प्रवचन के दौरान पूज्य साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजना श्री जी म.सा. ने कहा कि भारतीय परंपराओं में ग्रह-नक्षत्रों और राशियों का विशेष महत्व रहा है तथा जीवन में नवग्रहों के संतुलन को महत्वपूर्ण माना गया है। उन्होंने कहा कि संसार की प्रत्येक व्यवस्था संतुलन के सिद्धांत पर आधारित है। मानव जीवन भी सम और विषम परिस्थितियों से निरंतर गुजरता है। ऐसे में व्यक्ति को परिस्थितियों के बीच धैर्य, संयम और सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखना चाहिए। साध्वीश्री ने प्रवचन में जैन परंपरा और ज्योतिष ज्ञान के संबंध में विभिन्न धार्मिक एवं पारंपरिक संदर्भों का उल्लेख करते हुए कहा कि भगवान महावीर स्वामी के जन्मकाल से जुड़े प्रसंगों में भी लग्न और ज्योतिषीय गणना का वर्णन मिलता है। उन्होंने आचार्य भद्रबाहु स्वामी को ज्योतिष

विद्या का प्रकांड विद्वान बताते हुए नवग्रह शांति से संबंधित स्तोत्रों और धार्मिक परंपराओं का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि धार्मिक मान्यताओं के अनुसार व्यक्ति अपने जीवन में ग्रहों की प्रतिकूलता अनुभव होने पर आत्मचिंतन, संयम और आराधना के माध्यम से मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त कर सकता है। सूर्य से केतु तक नवग्रहों का महत्व साध्वीश्री ने बताया कि धार्मिक और ज्योतिषीय मान्यताओं में सूर्य को जीवन शक्ति और राजयोग से जुड़ा ग्रह माना गया है। जैन परंपरा के अनुसार सूर्य से संबंधित आराधना के लिए पद्मप्रभु स्वामी की उपासना का उल्लेख किया गया। चंद्र ग्रह को मन और भावनाओं से संबंधित माना जाता है। साध्वीश्री ने कहा कि मन की चंचलता और मानसिक अस्थिरता जैसी स्थितियों में धार्मिक आराधना और आत्मसंयम महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने पार्श्वनाथ, चंद्रप्रभु और विमलनाथ भगवान की आराधना का उल्लेख किया। मंगल ग्रह को साहस और पराक्रम से संबंधित बताते हुए उन्होंने कहा कि धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इसकी शांति और संतुलन के लिए वासुपूज्य स्वामी की आराधना की जाती है। आराधना और आत्मिक संतुलन का संदेश प्रवचन के दौरान बुध ग्रह के लिए शांतिनाथ भगवान और विमलनाथ परमात्मा, गुरु ग्रह के लिए आदिनाथ परमात्मा तथा शुक्र ग्रह के लिए सुविधिनाथ भगवान की आराधना का उल्लेख किया गया। साध्वीश्री ने कहा कि धार्मिक आस्था के साथ व्यक्ति को अपने कर्म, व्यवहार और जीवनशैली में भी सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने शनि ग्रह के संबंध में मुनिसुव्रत स्वामी की आराधना, राहु ग्रह से जुड़ी धार्मिक मान्यताओं के संदर्भ में नेमिनाथ परमात्मा की उपासना तथा केतु ग्रह की शांति के लिए मल्लिनाथ भगवान और पार्श्वनाथ भगवान की आराधना का उल्लेख किया। नवग्रह महाजाप एवं पूजन रविवार को साध्वीश्री ने श्रद्धालुओं से धर्म, साधना और आत्मसंयम को जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि धार्मिक आराधना का मूल उद्देश्य केवल बाहरी अनुष्ठान नहीं, बल्कि मन, विचार और आचरण में सकारात्मक संतुलन स्थापित करना है। श्री जिन कुशल सूरी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट की ओर से जानकारी दी गई कि नवग्रह महाजाप एवं विशेष पूजन का आयोजन रविवार को आराधना भवन में किया जाएगा, जिसमें श्रद्धालु धार्मिक आराधना और पूजन में सहभागिता करेंगे।

# मैसूर-अजमेर साप्ताहिक रेल सेवा शुरू

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

होसपेट, 5 सितंबर 2026। मैसूर-अजमेर के बीच साप्ताहिक रेल सेवा का संचालन 5 सितंबर से शुरू हो गया। रेल उपयोगकर्ता सलाहकार समिति के वरिष्ठ सदस्य बाबूलाल जी जैन के प्रयासों के बाद इस रेल सेवा के स्थायी रूप से शुरू होने से कर्नाटक के होसपेट, तुंगभद्रा डैम सहित आसपास के क्षेत्रों के यात्रियों को अजमेर और मार्ग में आने वाले प्रमुख शहरों तक आवागमन की सुविधा मिलेगी। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, गाड़ी संख्या 16281/16282 मैसूर-अजमेर एक्सप्रेस प्रत्येक शनिवार सुबह मैसूर से रवाना होगी। ट्रेन हासन, अरसीकेरे, दावणगेरे, कोट्टूर होते हुए शाम करीब 4:30 बजे तुंगभद्रा क्षेत्र पहुंचेगी। इसके बाद कोप्पल, गदग और हुबली होते हुए महाराष्ट्र एवं गुजरात के प्रमुख स्टेशनों से गुजरकर सोमवार सुबह अजमेर पहुंचेगी। वापसी में ट्रेन सोमवार शाम अजमेर से रवाना होकर निर्धारित मार्ग से बुधवार सुबह तुंगभद्रा

क्षेत्र पहुंचेगी और शाम तक मैसूर पहुंचने का कार्यक्रम बताया गया है। पहले अस्थायी रूप से चलती थी रेल सेवा बताया गया कि यह रेल सेवा इससे पहले अस्थायी रूप से रायचूर-बल्लारी-होसपेट मार्ग से संचालित होती थी, लेकिन पिछले कई महीनों से बंद थी। रेल उपयोगकर्ता सलाहकार समिति के वरिष्ठ सदस्य बाबूलाल जी जैन की मांग के बाद साप्ताहिक रेल सेवा को स्थायी रूप से शुरू किए जाने पर तुंगभद्रा डैम और होसपेट क्षेत्र के लोगों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनका आभार जताया। बाबूलाल जी जैन ने कहा कि क्षेत्र में रेल सुविधाओं के विस्तार और अधिक ट्रेनों के ठहराव के लिए आगे भी प्रयास जारी रहेंगे। उन्होंने कहा कि अरसीकेरे, कोट्टूर और हगरीबोम्मनहल्ली सहित कर्नाटक के स्थानीय यात्रियों के साथ महाराष्ट्र और गुजरात में रहने वाले प्रवासी समाज के लोगों को भी इस रेल सेवा का लाभ मिलेगा। किष्किंधा और अजमेर जाने वाले यात्रियों को सुविधा विष्णु समाज, होसपेट के अध्यक्ष ने रेल सेवा शुरू होने पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि नई ट्रेन से कर्नाटक, महाराष्ट्र और गुजरात के श्रद्धालुओं को किष्किंधा क्षेत्र, जिसे हनुमान जन्मभूमि से जोड़ा जाता है, आने-जाने में सुविधा मिलेगी। इसके अलावा अजमेर जाने वाले तीर्थयात्रियों के लिए भी यह रेल सेवा उपयोगी साबित होगी। रेल सेवा शुरू होने के अवसर पर तुंगभद्रा डैम क्षेत्र के निवासियों सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे। रमेश कुमार, अरुणा बुक स्टॉल, ऑटो यूसुफ, गफूर भाई, मोबीन रेड्डी, विजयनगर रेलवे यूजर्स कमेटी के महेश कुडुतनी, कलेश जीर सहित अनेक लोगों ने लोको पायलट का मिठाई खिलाकर स्वागत किया और ट्रेन को रवाना किया। रेल उपयोगकर्ता सलाहकार समिति के वरिष्ठ सदस्य बाबूलाल जी जैन ने रेल सेवा शुरू करने में सहयोग के लिए दक्षिण पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक एवं संबंधित रेल अधिकारियों का आभार व्यक्त किया। समाचार प्रेषकः जब्बरसिंह राजपुरोहित, मायलावास होसपेट

# भगवान नहीं देते, फिर पूजा क्यों?

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 5 सितंबर 2026। वीतरागी भगवान किसी को सांसारिक सुख, धन, पद या प्रतिष्ठा प्रदान नहीं करते, फिर उनकी पूजा और दर्शन क्यों किए जाएं? जैन दर्शन के इस महत्वपूर्ण

प्रश्न पर निर्यापक श्रमण श्री 108 वीर सागर जी महाराज ने अपने प्रवचन में कर्म सिद्धांत, आत्मशुद्धि तथा निमित्त-उपादान के संबंध को सरल उदाहरणों के माध्यम से समझाया। उन्होंने कहा कि जैन दर्शन के अनुसार प्रत्येक जीव अपने कर्मों और परिणामों के लिए स्वयं उत्तरदायी है। सांसारिक जीवन में मिलने वाली अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थितियां जीव के कर्मों के उदय से जुड़ी मानी जाती हैं। वीतरागी भगवान किसी के भाग्य को मनमाने ढंग से बदलने वाले नहीं हैं। इसलिए भगवान की आराधना को सांसारिक लाभ प्राप्त करने के साधन के रूप में देखना जैन दर्शन की मूल भावना नहीं है। भगवान निमित्त, जीव उपादान वीतरागी भगवान की पूजा के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए महाराज ने सूर्य और सोलर पैनल का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि सूर्य सभी के लिए समान रूप से प्रकाश देता है, लेकिन सौर ऊर्जा ग्रहण करने की क्षमता साधन के अनुसार अलग-अलग होती है। इसी प्रकार वीतरागी भगवान किसी भक्त को व्यक्तिगत रूप से कुछ प्रदान नहीं करते, लेकिन उनके वीतराग स्वरूप का चिंतन और दर्शन जीव के भीतर श्रद्धा, विनय तथा शुद्ध भाव उत्पन्न करने का निमित्त बन सकता है। परिवर्तन भगवान में नहीं, बल्कि पूजा करने वाले जीव के परिणामों में होता है। उन्होंने कहा कि भगवान निमित्त हैं और जीव के शुद्ध परिणाम उपादान हैं। जब व्यक्ति श्रद्धा और विनय के साथ आराधना करता है, तो उसके भीतर के राग-द्वेष, अहंकार और कषायों की तीव्रता कम होने की दिशा में प्रयास होता है। नमन शरीर का नहीं, अहंकार का हो श्री वीर सागर जी महाराज ने कहा कि वीतरागी प्रभु के सामने झुकना केवल शरीर को झुकाना नहीं है। वास्तविक नमन तब है, जब व्यक्ति अपने अहंकार और कषायों को कम करने का प्रयास करे। उनके अनुसार वीतरागी भगवान का जीवन और स्वरूप जीव के सामने आत्मशुद्धि का आदर्श प्रस्तुत करता है। प्रभु के गुणों का स्मरण व्यक्ति को भी उन गुणों को अपने जीवन में विकसित करने की प्रेरणा दे सकता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि पूजा का प्रभाव भगवान पर नहीं, बल्कि पूजा करने वाले व्यक्ति के भावों पर पड़ता है। भगवान को पूजा की आवश्यकता नहीं है, लेकिन जीव को अपने परिणामों को निर्मल बनाने की आवश्यकता है। सांसारिक लाभ क्षणभंगुर, आत्मकल्याण स्थायी लक्ष्य प्रवचन में उन्होंने कहा कि धन, पद, प्रतिष्ठा और सांसारिक सुविधाएं स्थायी नहीं हैं। परिस्थितियां कर्मों के अनुसार बदलती रहती हैं। इसके विपरीत आत्मशुद्धि, संयम और वीतरागता की दिशा में किया गया पुरुषार्थ व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास का आधार बन सकता है। उन्होंने श्रद्धालुओं से धर्म को केवल तात्कालिक समस्या के समाधान अथवा चमत्कार की अपेक्षा से नहीं जोड़ने का आग्रह किया। उनके अनुसार भगवान के समक्ष केवल सांसारिक इच्छाएं रखने के बजाय व्यक्ति को यह विचार करना चाहिए कि उसके जीवन में राग-द्वेष कितना कम हो रहा है, विनय कितनी बढ़ रही है और आत्मशुद्धि के लिए उसका पुरुषार्थ कितना बढ़ा है। सच्ची पूजा का अर्थ स्वयं को बदलना निर्यापक श्रमण श्री 108 वीर सागर जी महाराज ने कहा कि वीतरागी भगवान हमें कुछ इसलिए नहीं देते, क्योंकि जैन दर्शन जीव को अपने कर्म और पुरुषार्थ के प्रति स्वयं उत्तरदायी मानता है। भगवान की आराधना का वास्तविक उद्देश्य बाहरी उपलब्धियां प्राप्त करना नहीं, बल्कि अपने भीतर सकारात्मक और शुद्ध परिणामों का विकास करना है। उन्होंने श्रद्धालुओं से आह्वान किया कि वे वीतरागी प्रभु के गुणों को अपने जीवन का आदर्श बनाएं तथा सांसारिक स्वार्थों से ऊपर उठकर आत्मशुद्धि, संयम और वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ें। प्रवचन का केंद्रीय संदेश यही रहा कि सच्ची पूजा भगवान से कुछ मांगने में नहीं, बल्कि भगवान के गुणों को देखकर स्वयं को बदलने के संकल्प में है।

# चामुंडा धाम में गूंजे कृष्ण जयकारे

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 5 सितंबर 2026। राजस्थान राजपूत समाज कर्नाटक की ओर से कोटनपेठ स्थित श्री चामुंडा माताजी मंदिर में शुक्रवार रात श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ मनाया गया। भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के अवसर पर रात 12 बजे विशेष पूजा-अर्चना एवं धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस दौरान मंदिर परिसर श्रीकृष्ण के जयकारों से गूंज उठा। महोत्सव में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन किए तथा सुख, शांति और समृद्धि की कामना की। श्रीकृष्ण जन्म के निर्धारित समय पर श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक जयकारों के साथ भगवान का स्वागत किया, जिससे पूरा मंदिर परिसर भक्तिमय वातावरण में सराबोर हो गया।

राजस्थानी वेशभूषा में मनमोहक नृत्य

कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण छात्राओं एवं बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक नृत्य रहा। रंग-बिरंगी राजस्थानी पारंपरिक वेशभूषा में सजी बालिकाओं और छात्राओं ने उत्साहपूर्ण नृत्य प्रस्तुत कर उपस्थित श्रद्धालुओं का मन मोह लिया।

राजस्थानी संस्कृति और परंपराओं की झलक प्रस्तुत करते इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने जन्माष्टमी उत्सव की शोभा को और बढ़ा दिया। भक्ति संगीत और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के बीच श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह देखने को मिला। महाप्रसादी का आयोजन

धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के समापन के पश्चात राजस्थान राजपूत संघ, बेंगलुरु की ओर से महाप्रसादी का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने प्रसादी ग्रहण की।

आयोजकों ने बताया कि धार्मिक आयोजनों के माध्यम से समाज की सांस्कृतिक परंपराओं और विरासत को जीवंत बनाए रखने का निरंतर प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन समाज में आपसी एकता, भाईचारे और सांस्कृतिक मूल्यों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। श्री चामुंडा माताजी मंदिर में आयोजित श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव ने एक ओर श्रद्धालुओं को भक्ति से जोड़ा, वहीं दूसरी ओर राजस्थानी लोक-संस्कृति और पारंपरिक वेशभूषा की मनोहारी छटा ने आयोजन को यादगार बना दिया। समाचार प्रेषकः दलपतसिंह भायल, बेंगलुरु

# जन्माष्टमी पर माली समाज का भव्य उत्सव

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 5 सितंबर 2026। माली (सैनी) समाज कर्नाटक, बेंगलुरु के तत्वावधान में पैलेस ग्राउंड स्थित ग्रैंड कैस्टल में दो दिवसीय श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव श्रद्धा, उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया। महोत्सव के दौरान धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ सामाजिक सरोकार से जुड़े विभिन्न आयोजन भी किए गए। कार्यक्रम में भजन सम्राट रमेश माली, पाली ने सुमधुर भजनों की प्रस्तुति देकर श्रद्धालुओं को भक्तिरस से सराबोर किया। भक्ति गीतों के दौरान उपस्थित समाजबंधुओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। समाज भवन और मंदिर निर्माण के लिए सहयोग महोत्सव के दौरान विभिन्न चढ़ावों की बोलियां लगाई गईं। समाजबंधुओं ने समाज भवन एवं मंदिर निर्माण कार्य के लिए आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया। आयोजकों के अनुसार, सामूहिक सहयोग से समाज के विकास और धार्मिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। दही हांडी और रक्तदान शिविर आकर्षण दो दिवसीय आयोजन में दही हांडी फोड़ कार्यक्रम विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। युवाओं और समाजबंधुओं ने इसमें उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसके साथ ही रक्तदान

शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें समाज के लोगों ने रक्तदान कर सामाजिक सेवा का संदेश दिया। शिक्षा के क्षेत्र में प्रोत्साहन के उद्देश्य से प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। संतों का सानिध्य और समाजजनों की सहभागिता कार्यक्रम में महामंडलेश्वर प.पू. चेतनगिरी जी महाराज का पावन सानिध्य रहा। उनके सानिध्य में आयोजित धार्मिक कार्यक्रमों से श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह देखने को मिला। महोत्सव में समाज के संरक्षक घनश्याम सांखला, अध्यक्ष सज्जनराज सांखला, मंत्री प्रकाशचंद तंवर, सह मंत्री सोहनलाल सांखला, उपाध्यक्ष उदयराम परमार, कोषाध्यक्ष रामेश्वरलाल चौहान, सह कोषाध्यक्ष पवन भाटी, सांस्कृतिक मंत्री उत्तमचंद पंवार, सह सांस्कृतिक मंत्री घनश्याम जामोदिया तथा माली (सैनी) युवा संगठन के अध्यक्ष नंदकिशोर सोलंकी सहित समाज के अनेक वरिष्ठजन एवं विशिष्ट समाजबंधु उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मोहनलाल गोयल, रुघाराम सांखला, चेतनप्रकाश चौहान, हनुमान पंवार, नगीन चौहान, वरदीचंद देवड़ा, सुखराज चौहान, हापुराम चौहान, सुगनचंद चौहान, ईश्वरलाल सोलंकी, इराराम परिहार, जबराराम सोलंकी, श्रवण भाटी और ओगडराम चौहान सहित बड़ी संख्या में समाजजन मौजूद रहे। महाप्रसादी के साथ हुआ समापन महोत्सव के अवसर पर महाप्रसादी का आयोजन किया गया, जिसमें उपस्थित श्रद्धालुओं एवं समाजबंधुओं ने प्रसादी ग्रहण की। कार्यक्रम का सफल संचालन रूपेश सोलंकी ने किया। दो दिवसीय जन्माष्टमी महोत्सव ने धार्मिक आस्था के साथ सामाजिक एकजुटता, सेवा और शिक्षा को प्रोत्साहन देने का संदेश दिया। समाचार प्रेषकः रूपेश सोलंकी, बेंगलुरु

# होसपेट में हर्षोल्लास से मनाया श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

होसपेट, 5 सितंबर 2026। होसपेट शहर स्थित बाबा रामदेवजी मंदिर परिसर में भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मंदिर को रंग-बिरंगे फूलों और आकर्षक रोशनी से सजाया गया, जो श्रद्धालुओं के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ गणपति वंदना के साथ हुआ।

इसके बाद भजन संध्या में स्थानीय भजन गायकों ने भक्तिमय प्रस्तुतियां देकर वातावरण को कृष्णमय बना दिया। भजन गायक शांतीलाल सुथार ने गोकुल हालो कान्हाह्न भजन की प्रस्तुति से श्रद्धालुओं का मन मोह लिया। वहीं दिनेश शर्मा ने विभिन्न भजनों की प्रस्तुति दी। मांगीलाल राजपुरोहित ने गोमाता से जुड़े भजनों की भावपूर्ण प्रस्तुति देकर श्रद्धालुओं को भक्तिरस से सराबोर किया। मंदिर ट्रस्ट की ओर से परिसर को फूलों और विद्युत रोशनी से भव्य रूप से सजाया गया था। कार्यक्रम में दही-हांडी का आयोजन भी किया गया। रात्रि 12 बजे भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के अवसर पर नंद के घर आनंद भयो, हाथी घोड़ा पालकी, जय कन्हैया लाल कीह्न के जयघोष से मंदिर परिसर गूंज उठा। भगवान श्रीकृष्ण को 56 भोग, फल एवं पिंजरी का भोग अर्पित किया गया। इसके बाद महाआरती कर क्षेत्र में सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की गई। कार्यक्रम में विष्णु समाज के अध्यक्ष चंदन सिंह भाटी, सचिव मांगीलाल राजपुरोहित, उपाध्यक्ष रतनलाल पटेल, छत्रपति सोनी, कोषाध्यक्ष महेंद्र सोनी, ट्रस्ट सदस्य भंवरलाल सुथार, प्रकाश माली, नरपत सिंह, पूर्व अध्यक्ष मिठालाल खंडेलवाल, पूर्व सचिव मूलचंद शर्मा, बाबूलाल रावल, बाबूलाल राव सहित विष्णु समाज के अनेक सदस्य, माताएं-बहनें और बाल गोपाल उपस्थित रहे। सम्पूर्ण पूजा-अर्चना एवं धार्मिक अनुष्ठान मंदिर के पुजारी श्रवण कुमार भट्ट और चिंतामणि भट्ट ने विधिवत संपन्न कराए। कार्यक्रम की जानकारी जब्बरसिंह राजपुरोहित मायलावास होसपेट ने दी।

# अहिल्या उद्धार से धनुषभंग तक, मिथिला में गूंजा श्रीराम का पराक्रम

**भारतार्थ खबर**
**Bhaarataarth.com**

बेंगलुरु, 5 सितंबर 2026। पैलेस ग्राउंड, गेट नंबर-9 पर 1 से 7 सितंबर तक आयोजित सात दिवसीय श्रीराम कथा के पांचवें दिन भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा। कथा व्यास परम पूज्य श्री राजन जी महाराज ने भगवान श्रीराम के बक्सर से मिथिला प्रस्थान, अहिल्या उद्धार, जनकपुर आगमन, श्रीराम-सीता के प्रथम दर्शन, सीता जी की माता पार्वती से प्रार्थना, शिवधनुष यज्ञ, धनुषभंग और सीता-राम विवाह की तैयारियों का भावपूर्ण वर्णन किया। कथा के दौरान अहिल्या उद्धार का प्रसंग श्रद्धालुओं के लिए विशेष आकर्षण रहा। श्री राजन जी महाराज ने बताया कि महर्षि विश्वामित्र के साथ मिथिला जाते समय भगवान श्रीराम एक उजड़े स्थान पर पहुंचे। वहां शिला के रूप में पड़ी माता अहिल्या की कथा विश्वामित्र जी ने उन्हें सुनाई। भगवान श्रीराम की चरण-रज के स्पर्श से अहिल्या का उद्धार हुआ। महाराज जी ने इस प्रसंग से संदेश दिया कि मनुष्य को विपरीत परिस्थितियों में दोषारोपण करने के बजाय ईश्वर की इच्छा, अपने कर्म और धैर्य पर विश्वास रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रभु की भक्ति के लिए गृहस्थ जीवन का त्याग आवश्यक नहीं है। गृहस्थ आश्रम में रहते हुए भी व्यक्ति भगवान का स्मरण, सेवा और भजन कर सकता है। मिथिला में हुआ श्रीराम-लक्ष्मण का भव्य स्वागत अहिल्या उद्धार के बाद भगवान श्रीराम और लक्ष्मण महर्षि विश्वामित्र के साथ मिथिला पहुंचे। भगवान के आगमन का समाचार मिलने पर राजा जनक स्वयं उनका स्वागत करने पहुंचे। श्रीराम और लक्ष्मण के दिव्य स्वरूप को देखकर राजा जनक भाव-विभोर हो उठे। विश्वामित्र जी ने उन्हें दोनों राजकुमारों का परिचय देते हुए बताया कि वे अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र हैं। गुरु की आज्ञा लेकर श्रीराम और लक्ष्मण जनकपुर भ्रमण के लिए निकले। दोनों राजकुमारों के नगर में आने का समाचार फैलते ही उन्हें देखने के लिए बड़ी संख्या में नर-नारी उमड़ पड़े। कथा पंडाल में इस प्रसंग के दौरान भक्तिमय भजन ह्यश्री दशरथ राजकुमार, नजर तोहे लग जाएगीह्व की प्रस्तुति ने वातावरण को भावपूर्ण बना दिया। श्रीराम के प्रथम दर्शन से भाव-विभोर हुईं सीता जनकपुर में भगवान श्रीराम के दर्शन से माता सीता भी भाव-विभोर हो उठीं। उन्होंने माता पार्वती से अपने मन की मनोकामना पूर्ण होने की प्रार्थना की। इस प्रसंग पर भक्तिमय स्तुति-गान से कथा पंडाल भक्तिरस में डूब गया। महाराज जी ने श्रीराम और सीता के प्रथम मिलन के प्रसंग के माध्यम से श्रद्धा, विश्वास और ईश्वर के प्रति समर्पण का महत्व बताया। शिवधनुष के सामने विफल हुए अनेक राजा इसके बाद कथा शिवधनुष यज्ञ के प्रसंग पर पहुंची। राजा जनक ने घोषणा की कि जो भगवान शिव के पिनाक धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर उसका भंग करेगा, वही माता सीता का वरण करेगा। सभा में मौजूद अनेक राजा-महाराजाओं ने धनुष उठाने का प्रयास किया, लेकिन कोई उसे हिला तक नहीं सका। सभी राजाओं की असफलता के बाद राजा जनक ने भावुक होकर कहा कि क्या धरती वीरों से खाली हो गई है। यह सुनकर लक्ष्मण जी क्रोधित हो उठे। उन्होंने रघुवंश की वीरता का स्मरण कराते हुए राजा जनक के कथन पर आपत्ति जताई। भगवान श्रीराम ने लक्ष्मण जी को शांत करते हुए कहा कि वे यहां धनुष देखने आए हैं, उसे तोड़ने नहीं। इसके बाद महर्षि विश्वामित्र ने श्रीराम को धनुष उठाने और उसका भंग करने की आज्ञा दी। गुरु की आज्ञा पर श्रीराम ने किया शिवधनुष भंग महर्षि विश्वामित्र की आज्ञा मिलते ही भगवान श्रीराम धनुष की ओर बढ़े। सभा में उपस्थित सभी लोगों की निगाहें श्रीराम पर टिक गईं। माता सीता मन ही मन प्रभु से प्रार्थना कर रही थीं, जबकि माता सुनयना भी इस क्षण को लेकर चिंतित थीं। भगवान श्रीराम ने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए शिवधनुष का भंग कर दिया। धनुष टूटते ही पूरी सभा जयघोष से गूंज उठी। इस प्रसंग ने कथा पंडाल में उपस्थित श्रद्धालुओं को भाव-विभोर कर दिया। धनुषभंग के बाद मिथिला में छाया विवाह का उत्सव शिवधनुष भंग के साथ माता सीता और भगवान श्रीराम के विवाह का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसके बाद अयोध्या से राजा दशरथ अपने पुत्रों भरत और शत्रुघ्न सहित मिथिला पहुंचे। दोनों राजपरिवारों में विवाह की तैयारियां शुरू हुईं और मिथिला नगरी उत्सव के रंग में रंग गई। विवाह प्रसंग के दौरान राजा जनक द्वारा भगवान श्रीराम के चरण पखारने का वर्णन सुनकर श्रद्धालु भाव-विभोर हो उठे। कथा पंडाल ह्वसियावर रामचंद्र की जयह्व और ह्वजय श्रीरामह्व के जयघोष से गूंजता रहा। कथा से मिला मयार्दा और समर्पण का संदेश श्री राजन जी महाराज ने कहा कि भगवान श्रीराम का चरित्र केवल कथा सुनने का विषय नहीं, बल्कि जीवन में अपनाने की प्रेरणा है। अहिल्या प्रसंग क्षमा और स्वीकार्यता का संदेश देता है, श्रीराम-लक्ष्मण का आचरण गुरु आज्ञा के पालन की प्रेरणा देता है, सीता जी की प्रार्थना श्रद्धा का प्रतीक है और शिवधनुष भंग पुरुषार्थ तथा मयार्दा का संदेश देता है। पैलेस ग्राउंड के गेट नंबर-9 पर चल रही श्रीराम कथा में प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। 1 सितंबर से शुरू हुई यह कथा 7 सितंबर 2026 तक चलेगी। आयोजन व्यवस्था में इनकी रही महत्वपूर्ण भूमिका कार्यक्रम के सफल आयोजन की व्यवस्था में शैलेश मिश्रा, रोहित उपाध्याय, धीरज राज, आदेश, गौरी मिश्रा, प्रवीण पांडेय, अंजनी ओझा, आशुतोष ओझा, गोपाल ओझा, अंकित उपाध्याय और नीतीश मिश्रा सहित आयोजन समिति के सदस्यों ने महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभाईं। पांचवें दिन आयोजित रामकथा में माननीय श्री सिरीसानंद, माननीय उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री आशीष राय, समाजवादी पार्टी के प्रदेश सचिव श्री अखिलेश चौबे तथा कर्नाटक के एनडीआरएफ प्रमुख मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

# विष्णु महाराज का चातुर्मास सम्पन्न

**भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com**

चेन्नई, 5 सितंबर 2026। साहूकारपेट स्थित राजेश्वर भवन में संत श्री विष्णु महाराज, शिकारपुरा धाम का चातुर्मास धार्मिक एवं भक्तिमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। हर वर्ष की परंपरा के अनुसार इस वर्ष भी सावन माह से चातुर्मास के साथ श्रीकृष्ण झूला उत्सव का आयोजन किया गया। इस दौरान प्रतिदिन धार्मिक अनुष्ठान, पूजा-अर्चना और भजन-कीर्तन हुए, जिसमें समाज के बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। चातुर्मास के दौरान श्री राजेश्वर मंदिर में सुबह पूजा-अर्चना तथा शाम को भजन-कीर्तन का आयोजन होता रहा। करीब 40 दिनों तक चले श्रीकृष्ण झूला उत्सव ने श्रद्धालुओं को भक्ति और आध्यात्मिक वातावरण से जोड़े रखा। प्रतिदिन श्रद्धालुओं के लिए प्रसाद वितरण भी किया गया। जन्माष्टमी पर कृष्ण जन्मोत्सव की धूम शुक्रवार को जन्माष्टमी के अवसर पर भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव हर्षोल्लास और भक्तिभाव के साथ मनाया गया। मंदिर परिसर में धार्मिक कार्यक्रमों के साथ श्रीकृष्ण के जयकारे गूंजते रहे और श्रद्धालुओं ने भक्ति संगीत का आनंद लिया। उत्सव में राजस्थान के जोधपुर से आए भजन गायक सोहन कलबी ने प्रतिदिन कृष्ण भक्ति से जुड़े भजनों की प्रस्तुति दी। उनकी भजन प्रस्तुतियों ने श्रद्धालुओं को भाव-विभोर किया और पूरे आयोजन में भक्ति का रंग और गहरा कर दिया।

सनातन संस्कृति के संरक्षण का संदेश श्रीकृष्ण झूला उत्सव का आयोजन चौधरी आंजणा समाज, चेन्नई की ओर से किया गया। समाज के वरिष्ठ सदस्य नरिगाराम जी ने कहा कि महानगर की भागदौड़ भरी जिंदगी में ऐसे धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन लोगों को आध्यात्मिक वातावरण से जोड़ने का कार्य करते हैं। भजन-कीर्तन और धार्मिक आयोजनों के माध्यम से सनातन संस्कृति एवं धार्मिक परंपराओं के प्रचार-प्रसार को भी बल मिलता है। उन्होंने कहा कि सावन माह में साधु-संतों का चातुर्मास भारतीय धार्मिक परंपरा में विशेष महत्व रखता है। संतों का चातुर्मास समाज के लिए आध्यात्मिक मार्गदर्शन और गौरव का विषय है। युवा कार्यकताओं ने संभाली जिम्मेदारी करीब डेढ़ महीने तक चले श्रीकृष्ण झूला उत्सव में समाज के कमेटी सदस्यों के साथ युवा कार्यकताओं ने भी आयोजन की विभिन्न व्यवस्थाओं में जिम्मेदारी निभाई। सामूहिक सहयोग से धार्मिक कार्यक्रमों का संचालन किया गया। चातुर्मास के समापन के साथ ही श्रीकृष्ण झूला उत्सव भी सम्पन्न हुआ। आयोजन ने श्रद्धालुओं को धार्मिक आस्था से जोड़ने के साथ सामाजिक एकता और सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण का संदेश दिया। समाचार प्रेषकः दिनेश जी कराड चेन्नई तमिलनाडु।

# शिक्षा से ही बनेगा बेहतर भारतः बी.के. हरिप्रसाद

**भारतार्थ खबर**
**Bhaarataarth.com**

बेंगलुरु, 5 सितंबर 2026। कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेटी (KPCC) कार्यालय के भारत जोड़ो हॉल में शुक्रवार को शिक्षक दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में KPCC अध्यक्ष बी.के. हरिप्रसाद ने शिक्षा, संवैधानिक मूल्यों, सामाजिक समरसता और देश की बहुलतावादी संस्कृति को लेकर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि शिक्षक केवल विद्यार्थियों को ज्ञान देने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि समाज और देश के भविष्य को दिशा देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। मानवीय संवेदनाओं को बताया समाज की ताकत कार्यक्रम में अपने संबोधन की शुरूआत करते हुए हरिप्रसाद ने एक दिव्यांग महिला की सहायता करने वाली दूसरी महिला का उदाहरण देते हुए कहा कि समाज की वास्तविक ताकत मानवीय संवेदनाओं और एक-दूसरे की मदद करने की भावना में है। उनके अनुसार सत्ता और पद से अधिक महत्वपूर्ण मानवीय मूल्य हैं। उन्होंने कहा कि समाज को ऐसा बनाने की जरूरत है, जहां महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों और दिव्यांगजनों के साथ सम्मानजनक व्यवहार हो। गौरी लंकेश को किया याद हरिप्रसाद ने शिक्षक दिवस और वरिष्ठ पत्रकार गौरी लंकेश की पुण्यतिथि के संयोग का उल्लेख करते हुए उनके योगदान को याद किया। उन्होंने कहा कि गौरी लंकेश सामाजिक सद्भाव, समानता और सभी समुदायों के अधिकारों की बात करती थीं। उन्होंने कन्नड़ कवि कुवेम्पु की बहुलतावादी सोच का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत को सभी जातियों, धर्मों और समुदायों के लिए शांति और सह-अस्तित्व का देश बने रहना चाहिए। शिक्षा को देश के भविष्य की आधारशिला बताया हरिप्रसाद ने अपने संबोधन में भारत में शिक्षा के ऐतिहासिक विकास का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के समय देश में साक्षरता का स्तर काफी कम था और बाद के वर्षों में विभिन्न सरकारों के प्रयासों से शिक्षा का विस्तार हुआ। उन्होंने मौलाना अबुल कलाम आजाद सहित विभिन्न शिक्षा मंत्रियों और सरकारों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि देश का भविष्य मजबूत करने के लिए शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देना जरूरी है। उन्होंने कहा कि केवल साक्षर होना और वास्तव में शिक्षित होना दो अलग-अलग बातें हैं। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में विवेक, सामाजिक जिम्मेदारी और सही-गलत को समझने की क्षमता विकसित करना भी है। शिक्षकों की भूमिका केवल पढ़ाने तक सीमित नहीं KPCC अध्यक्ष ने कहा कि शिक्षक समाज के महत्वपूर्ण opinionmaker होते हैं। उनका दायित्व केवल पाठ्यक्रम पूरा करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में संवैधानिक मूल्यों, सहिष्णुता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करना भी है। उन्होंने कहा कि स्कूल और कॉलेजों में किसी भी प्रकार की नफरत और भेदभाव को समाप्त करने के लिए शिक्षकों को आगे आना चाहिए। जाति, भाषा और धर्म के आधार पर भेदभाव से ऊपर उठकर विद्यार्थियों के बेहतर भविष्य के लिए काम करना आवश्यक है। भारत की विविधता को बताया उसकी सबसे बड़ी ताकत हरिप्रसाद ने भारत की धार्मिक, भाषाई और सांस्कृतिक विविधता का उल्लेख करते हुए कहा कि देश की पहचान उसकी बहुलता में है। उन्होंने हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध, सिख, जैन और पारसी समुदायों का उल्लेख करते हुए भारत की विविध धार्मिक परंपराओं को उसकी विशेषता बताया। उन्होंने कहा कि भारत की भाषाई विविधता भी उसकी सांस्कृतिक शक्ति है और इस बहुलतावादी स्वरूप को सुरक्षित रखना सभी नागरिकों की जिम्मेदारी है। सरकार सभी नागरिकों की होनी चाहिए हरिप्रसाद ने अपने संबोधन में संविधान के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप का उल्लेख करते हुए कहा कि सरकार किसी एक धर्म की नहीं, बल्कि देश के सभी नागरिकों की होती है। उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में सभी धर्मों और समुदायों को समान सम्मान मिलना चाहिए। उन्होंने शिक्षकों से संविधान की भावना के अनुरूप विद्यार्थियों को समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे के मूल्यों से जोड़ने का आह्वान किया। सरकारी स्कूलों की स्थिति पर उठाए सवाल उन्होंने सरकारी स्कूलों के बंद होने और निजी शिक्षण संस्थानों के बढ़ने के मुद्दे पर भी चिंता जताई। उन्होंने कहा कि समाज को इस पर विचार करना चाहिए कि सरकारी शिक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए क्या कदम उठाए जाने चाहिए। हरिप्रसाद ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हर बच्चे तक पहुंचनी चाहिए और शिक्षकों को बिना किसी भेदभाव के विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए काम करना चाहिए। धार्मिक आस्था को निजी विषय रखने की अपील अपने संबोधन में उन्होंने धर्म और राजनीति के संबंध को लेकर भी टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी धार्मिक आस्था का पालन करने की स्वतंत्रता है, लेकिन सार्वजनिक जीवन और शासन व्यवस्था में संविधान के मूल्यों को सर्वोपरि रखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत की शक्ति उसकी विविधता और लोकतांत्रिक व्यवस्था में है तथा इस विरासत को बनाए रखना सभी की जिम्मेदारी है। शिक्षा और संवैधानिक मूल्यों पर दिया जोर हरिप्रसाद ने कहा कि देश को आगे ले जाने में शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

# कलबी समाज की प्रतिभाओं का होगा सम्मान

**भारतार्थ खबर**
**Bhaarataarth.com**

शिकारपुरा, 5 सितंबर 2026। कलबी समाज की प्रतिभाओं को शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं, सरकारी सेवाओं और खेलकूद के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए सम्मानित करने हेतु संत श्री राजाराम जी युवा जागृति मंच, शिकारपुरा राजस्थान द्वारा सातवें राज्य स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया जाएगा। यह समारोह देवझूलनी एकादशी के अवसर पर 22 सितंबर 2026, मंगलवार को शिकारपुरा धाम में आयोजित होगा। आयोजन परम पूज्य गादीपति महंत श्री श्री 108 श्री दयाराम जी महाराज के सानिध्य तथा संत श्री राजाराम आश्रम मंदिर ट्रस्ट, शिकारपुरा के मार्गदर्शन में संपन्न होगा। आयोजकों के अनुसार, राज्य स्तरीय प्रतिभा सम्मान के लिए केवल राजस्थान में निवास करने वाले कलबी समाज के प्रतिभागियों को शामिल किया जाएगा। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर की वर्ष 2026 की कक्षा 10वीं एवं 12वीं परीक्षा में राजस्थान के सरकारी अथवा निजी विद्यालय से 90 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा। इसी प्रकार राजस्थान राज्य में स्थित सरकारी अथवा निजी विद्यालयों से सीबीएसई बोर्ड परीक्षा-2026 में 90 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले कलबी समाज के विद्यार्थी भी प्रतिभा सम्मान के पात्र होंगे। छात्र और छात्राओं के लिए समान प्रतिशत योग्यता निर्धारित की गई है। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता पाने वाले भी होंगे सम्मानित आयोजन समिति ने बताया कि वर्ष 2026 में राजस्थान से नीट, एम्स, आईआईटी, जेईई, मैट अथवा क्लैट जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर राजकीय महाविद्यालय में प्रवेश पाने वाले अथवा फ्री सीट पर चयनित विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त राजस्थान से सीए और सीएस की अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले प्रतिभागियों को भी राज्य स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह में शामिल किया जाएगा। राज्य अथवा केंद्र सरकार द्वारा किसी भी क्षेत्र में सम्मानित प्रतिभाओं को भी समारोह में सम्मानित करने का प्रावधान रखा गया है। सरकारी नौकरी और खिलाड़ियों को भी मिलेगा सम्मान आयोजकों के अनुसार, 30 अगस्त 2025 से 15 सितंबर 2026 के बीच राज्य अथवा केंद्र सरकार की किसी भी सरकारी सेवा में नियुक्ति प्राप्त करने वाले कलबी समाज के प्रतिभागियों को सम्मानित किया जाएगा। इसमें वे अभ्यर्थी भी शामिल होंगे जिन्होंने उक्त अवधि में प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण कर प्रशिक्षण, नियुक्ति अथवा ज्वाइनिंग पत्र प्राप्त कर लिया हो। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में 30 अगस्त 2025 से 15 सितंबर 2026 के दौरान भाग लेने वाले समाज के खिलाड़ियों को भी राज्य स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह में शामिल करने की घोषणा की गई है। 15 सितंबर तक जमा कराने होंगे दस्तावेज प्रतिभा सम्मान समारोह में शामिल होने के इच्छुक प्रतिभागियों से अपने मूल दस्तावेजों के साथ आवश्यक प्रमाण-पत्रों एवं ज्वाइनिंग पत्र की फोटो कॉपी निर्धारित पदाधिकारियों के पास जमा कराने की अपील की गई है। आयोजकों ने स्पष्ट किया है कि दस्तावेज जमा कराने की अंतिम तिथि 15 सितंबर 2026 निर्धारित की गई है। निर्धारित समय सीमा के बाद प्राप्त होने वाले दस्तावेजों को स्वीकार नहीं किया जाएगा और संबंधित प्रतिभागी को सम्मान समारोह में शामिल नहीं किया जा सकेगा। समारोह का आयोजन संत श्री राजाराम आश्रम ट्रस्ट, शिकारपुरा के तत्वावधान में संत श्री राजाराम जी युवा जागृति मंच, शिकारपुरा राजस्थान द्वारा किया जाएगा। दस्तावेज जमा कराने के लिए संपर्क अशोक पटेल धवा, अध्यक्ष, झवर तहसील इकाई -9950161453 सोहन पटेल सरेचा, अध्यक्ष, लूणी तहसील इकाई - 7742088730 श्रवणराम पटेल मोगड़ा कल्ला, तहसील इकाई - 9461013421 निंबाराम पटेल, अध्यक्ष, उत्तर तहसील इकाई, जोधपुर - 9829943536 श्रवण पटेल खुडाला, जोधपुर जिलाध्यक्ष, संत श्री राजाराम जी युवा जागृति मंच, शिकारपुरा राजस्थान - 9928758740 आयोजन समिति ने समाज के पात्र विद्यार्थियों, नव-नियुक्त सरकारी कर्मियों और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भाग लेने वाले खिलाड़ियों से समय रहते अपने दस्तावेज जमा कराकर इस राज्य स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह का हिस्सा बनने का आह्वान किया है। समाचार प्रेषकः किशनाराम पटेल, गुरुवाणी प्रचारक एवं सामाजिक विश्लेषक।

# राधा-कृष्ण के जयकारों से गूंजा राजराजेश्वरी नगर

**भारतार्थ खबर**
**Bhaarataarth.com**

बेंगलुरु, 5 सितंबर 2026। राजराजेश्वरी नगर स्थित हरे कृष्ण मंदिर के तत्वावधान में वासवी महल कल्याण मंडप में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर भगवान श्रीकृष्ण की विशेष झांकी सजाई गई, जिसे देखने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। भक्तों ने राधा-कृष्ण के दर्शन किए, भगवान को झूला झुलाया और महाभिषेक में भाग लेकर पुण्य लाभ प्राप्त किया। जन्माष्टमी उत्सव में नन्हे-मुन्ने बालक-बालिकाएं भगवान श्रीकृष्ण की मनोहारी वेशभूषा में पहुंचे। बाल गोपाल के रूप में सजे बच्चों ने आयोजन की आध्यात्मिक छटा को और आकर्षक बना दिया। परिसर में श्रद्धालुओं की मौजूदगी और भक्ति भाव से वातावरण कृष्णमय नजर आया। भजन संध्या में झूमे श्रद्धालु कार्यक्रम के दौरान स्थानीय कलाकारों ने देर रात तक भजनों की प्रस्तुतियां दीं। कृष्ण भक्ति से ओत-प्रोत भजनों पर श्रद्धालु भाव-विभोर होकर झूमते नजर

आए। भजन संध्या ने पूरे आयोजन को भक्तिमय बना दिया और देर रात तक श्रद्धालु आध्यात्मिक आनंद में डूबे रहे। गौसेवा और कृष्ण भक्ति का संदेश प्रभुपाद गौशाला के प्रमुख संत आनंद कृष्ण दास ने भगवान श्रीकृष्ण के गौ प्रेम को मानव समाज के लिए प्रेरणादायी बताया। उन्होंने कहा कि भगवान कृष्ण का जीवन करुणा, सेवा और प्राणी मात्र के प्रति संवेदना का संदेश देता है। गौसेवा और जीवों के प्रति प्रेम भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। कार्यक्रम में महेंद्र मुणोत ने राधा-कृष्ण के दर्शन किए। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण का जन्म प्राणी मात्र के कल्याण का संदेश देता है। उन्होंने कहा कि भारतीय परंपरा में बांसुरी धारण करने वाले कन्हैया की भक्ति के साथ सुदर्शन चक्रधारी श्रीकृष्ण को आदर्श के रूप में देखा जाता है। श्रद्धा और संस्कृति का संगम जन्माष्टमी के इस आयोजन में धार्मिक आस्था के साथ भारतीय संस्कृति और पारिवारिक संस्कारों की भी झलक दिखाई दी। बच्चों की कृष्ण वेशभूषा, भगवान की झांकी, महाभिषेक, दर्शन और भजन संध्या ने श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक वातावरण से जोड़े रखा। आयोजकों के अनुसार, ऐसे धार्मिक आयोजन समाज में भक्ति, सेवा, संस्कार और सांस्कृतिक परंपराओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कार्यक्रम श्रद्धालुओं के लिए भगवान श्रीकृष्ण के जीवन, उनके संदेश और लोककल्याण की भावना से जुड़ने का अवसर बना। समाचार प्रेषकः उपेन्द्र कुमार बेंगलुरु

# डॉ. लक्ष्मी को विजनरी मेंटर अवॉर्ड

**भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com**

बेंगलुरु, 5 सितंबर 2026। स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान तथा समर्पित मार्गदर्शन के लिए डॉ. के. एस. लक्ष्मी को डॉ. एस. राधाकृष्णन विजनरी मेंटर अवॉर्ड 2026 से सम्मानित किया गया। यह सम्मान ट्रेटायुग फाउंडेशन की ओर से प्रदान किया गया। डॉ. के. एस. लक्ष्मी को यह प्रतिष्ठित सम्मान स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा के क्षेत्र में उनके निरंतर योगदान, शिक्षार्थियों के मार्गदर्शन तथा पेशेवर उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने के प्रयासों के लिए दिया गया। डॉ. लक्ष्मी पिछले 12 वर्षों से स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा के क्षेत्र में अपनी सेवाएं दे रही हैं। इस दौरान उन्होंने विद्यार्थियों और शिक्षार्थियों के शैक्षणिक एवं व्यावसायिक विकास के लिए निरंतर कार्य किया। उनके मार्गदर्शन का उद्देश्य शिक्षार्थियों में आत्मविश्वास, जिम्मेदारी और पेशेवर दक्षता को विकसित करना रहा है। शिक्षा को बनाया परिवर्तन का माध्यम डॉ. लक्ष्मी की कार्यशैली शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जित करने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक परिवर्तन की शक्ति के रूप में देखने की दृष्टि को दशार्ती है। उन्होंने शिक्षार्थियों को शैक्षणिक मार्गदर्शन के साथ व्यावसायिक चुनौतियों के लिए तैयार करने और नई पीढ़ी को प्रेरित करने पर विशेष ध्यान दिया। उनके प्रयासों से सीखने, नवाचार, आत्मविश्वास और पेशेवर विकास को प्रोत्साहित करने वाला सकारात्मक वातावरण विकसित करने में मदद मिली है। 12 वर्षों की सेवा को मिली पहचान यह सम्मान शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में डॉ. लक्ष्मी की 12 वर्षों की समर्पित यात्रा की महत्वपूर्ण पहचान के रूप में देखा जा रहा है।

# द्वारका में गूंजा जय श्रीकृष्ण

**भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com**

द्वारका, 5 सितंबर 2026। साध्वी श्री भगवती बाई के पावन सानिध्य में भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव एवं दही हांडी कार्यक्रम श्रद्धा, उत्साह और धार्मिक उल्लास के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान पूरा परिसर 'जय श्रीकृष्ण' के जयघोष से भक्तिमय हो उठा। श्रद्धालुओं ने भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव की खुशियां मनाते हुए विधिवत पूजा-अर्चना की तथा दही हांडी कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। इस अवसर पर आयोजित धार्मिक कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में विशेष भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया। श्रद्धालु देर रात तक भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन रहे और मधुर भजनों एवं कीर्तनों के माध्यम से प्रभु का गुणगान किया। जैसे-जैसे रात्रि आगे बढ़ती गई, श्रद्धालुओं का उत्साह और भक्ति भाव भी बढ़ता गया। पूरा परिसर कृष्णमय वातावरण में रंग गया और चारों ओर भक्ति तथा आध्यात्मिक उल्लास का वातावरण दिखाई दिया। साध्वी श्री भगवती बाई के सानिध्य में आयोजित इस धार्मिक आयोजन ने श्रद्धालुओं के बीच आस्था, भक्ति और आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार किया। उपस्थित श्रद्धालुओं ने भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन एवं स्मरण के साथ आयोजन में सहभागिता कर आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम ने भगवान श्रीकृष्ण के जीवन से जुड़े प्रेम, भक्ति और धर्म के संदेशों को स्मरण करने का अवसर प्रदान किया तथा श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक भावनाओं से जोड़ दिया।

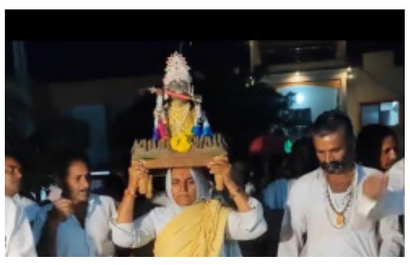

Printed Published & Owner by Dhanna Ram Choudhary And Printed at MNS Printers Pvt. Ltd., No.345/4, Bhattarahalli, Old Madras Road, Bengaluru Karnataka-560049. And Published at "Maruthi"Plaza"", No. 10/1, 1st Cross Road, 3rd Floor , Oil Mill Road, Arvind Nagar , Maruthi Seva Nagar Post, Kammanahalli, Bengaluru Urban, Karnataka -560033, Editor Dhanna Ram Choudhary , For Editorial 91641 17755, Advertisement 88676 89130 , RNI No. KNHIN/2026/A5540. E-Mail: news@bhaarataarth.com, Website: bhaarataarth.com, Established: 2026